भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्र के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 2 | **फरवरी** 2001 | **अंक** 2

पांचाली : नाथ-अनाथवत्

डॉ० बच्चन सिंह हिन्दी साहित्य के प्रख्यात समीक्षक और इतिहास-लेखक हैं। 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' से सभी साहित्य-प्रेमी परिचित हैं। कथा-लेखन के प्रति उनका झुकाव आकस्मिक नहीं है। बहुत पहिले विश्वविद्यालय प्रकाशन से उनका एक कहानी संग्रह 'कई चेहरों के बीच' छप चुका है जो अब अप्राप्य है। उनका पहला उपन्यास 'लहरें और कगार' 1950 में छपा था। 'सूतो वा सूत पुत्रो वा' कर्ण पर आधारित उनका दूसरा उपन्यास है और 'पांचाली' तीसरा।

—सम्पादक

पांचाली महाराज द्रुपद की पुत्री, धृष्टद्युम्न की बहिन पाँच अजेय पांडवों की धर्मपत्नी और कृष्ण की सखी थी, फिर भी किसी की कुछ नहीं थी। वह जीवनभर अपने अनाथवत् जीवन के विरुद्ध संघर्ष करती रही, लड़ती-जूझती रही। इस जिजीविषा का नाम है 'पांचाली'।

पांचाली नाम क्यों? द्रौपदी क्यों नहीं, याज्ञसेनी क्यों नहीं? पाँच नदियों में विभाजित पंचनद की तरह पाँच पतियों में विभक्त द्रौपदी, अत: पांचाली। युधिष्ठिर की उबाऊ कथा सुनने के लिए अभिशापित थी। अर्जुन को प्यार करती थी, पर वह हमेशा उससे दूर-दूर रहा। भीमकाय भीम की बाँहों में बँधने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था। कृष्ण अच्युत थे, अनासक्त कर्मयोगी थे।

पांचाली अपने समय की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी कुरुक्षेत्र की सर्वाधिक बुद्धिमती। पर उसे सुन्दर होने, बुद्धिमान होने का मूल्य चुकाना पड़ता है। यों तो स्त्री को स्त्री होने का ही सबसे बड़ा मूल्य चुकाना पड़ता है। पुरातन काल से ही पुरुष-प्रधान समाज में उसका दम घुटता आ रहा है। इस समाज से लड़ने के लिए उसमें आग शुरू से ही मौजूद थी। इस 'पांचाली' में उस आग की चिन्गारी देखी जा सकती है। वह तो अग्निकुण्ड से पैदा ही हुई थी। वह आजीवन स्वयं जलती रही और दूसरों को जलाती रही। इस अग्निकुण्ड का प्रतीकात्मक अर्थ इस उपन्यास के ताने-बाने में रचनात्मक ढंग से रचा-बसा है। आज भी स्त्री को नंगा किया जा रहा है, उसे जुए के दाँव पर हारा जा रहा है, बेचा जा रहा है, कड़ाही के खौलते तेल में भूना जा रहा है। इसके विरुद्ध द्रौपदी की आवाज कभी तेज, कभी मद्धिम सुनाई पड़ती है।

तारीफ तो यह है कि युधिष्ठिर, भीष्म, द्रोण, भीम, अर्जुन, कृष्ण सभी युद्ध के विरुद्ध हैं पर सभी युद्ध करते हैं। द्रौपदी की अकेली आवाज युद्ध के पक्ष में है—अन्याय के विरुद्ध युद्ध के पक्ष में। युद्ध के पक्ष में धर्मराज युधिष्ठिर से बहस करती रहती है। कृष्ण को भी सांकेतिक ढंग से सन्धि न होने देने की सलाह देती है, उनके आगे दु:शासन द्वारा खींचे हुए अपने नील कुंचित केश को बिखेर देती है। पाठकों के मन में प्रश्न उठता है कि युद्ध के लिए किन्हीं अर्थों में पांचाली भी जिम्मेदार है।

बच्चन सिंह के उपन्यासों की खास विशेषता यह है कि पाठक भी उसका एक पात्र हो जाता है। उसे टेक्स्ट को 'डी-कांस्ट्रक्ट' करना पड़ता है। वह उपन्यास में उठे हुए प्रश्नों पर अपने प्रश्न भी उठाता है। 'भृगु आश्रम', 'स्वागत', 'क्षेपक' आदि के प्रयोग इसके कथा-प्रवाह में बाधा डालते है। इनसे उपन्यास की भाषिक रचना को एक नया संदेहात्मक बौद्धिक आयाम देते हैं।

साहित्य की अनेकार्थकता के इस जमाने में कोई इसे प्रेम कथा कह सकता है, कोई औरत की जिन्दगी की त्रासदी। कोई इसमें युद्ध की उस विभीषिका को देख सकता है जिसमें न कोई जीतता है और न कोई हारता है। हार-जीत, सुख-दु:ख से गुजरता हुआ महाप्रस्थान या मृत्यु के वरण की मंजिल तक पहुँचता है। उसके आगे राह नहीं है।

इसे पढ़ने के बाद पाठक किस मंजिल पर पहुँचेगा, कोई नहीं जानता। इसका निर्णय तो उसे ही करना पड़ेगा महाप्रस्थान के पथ पर सब एक साथ चल रहे। कोई किसी के साथ नहीं चल रहा है।

डॉ० बच्चन सिंह का नया उपन्यास 'पांचाली' : नाथवती-अनाथवत्

स्वयंवर

पांचाल की राजधानी कांपिल्य। कांपिल्य नगर दुल्हन की तरह सजा था। धुले-पुछे राजमार्ग, पुष्प-रस-गंध में धुली गमकती गलियाँ। स्वयंवर मंडप में तो पांचाल का समस्त ऐश्वर्य और वैभव उड़ेल दिया गया था। वह यौवन-मद से उमड़ती चाँदनी की तरह जगमगा रहा था। मणि-कुट्टिम भूमि, सोने-चाँदी की तारों टँगी झालरें, रंग-बिरंगी फूल मालाएँ। बीच में स्थापित स्वस्तिक-मंडित पुष्प-कलश। आम्र-पल्लवों की तनी वन्दनवारें।

आकर्षक कौशेय वस्त्रों में लिपटी, मूल्यवान आभूषणों से अलंकृत मैं रंगमंडप में पहुँची। आदमकद दर्पण में झिलमिलाता हुआ मेरा प्रतिबिम्ब खिल उठा। मैं सौन्दर्यगर्विता तो थी ही। इस प्रतिबिम्ब के कारण मेरा सौन्दर्य-गर्व और बढ़ गया। मुझे मालूम था कि अपरूप नारियों को तलवार की धार पर दौड़ना पड़ता है। और नशा भले ही छूट जाय, लेकिन सौन्दर्य का नशा नहीं उतरता। मैं अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से राजसभा को सदर्प देख रही थी।

मेरा भाई धृष्टद्युम्न घोषित कर रहा था—''राजाओं, मेरी बात ध्यान से सुनें। आज मेरी बहिन और महाराज द्रुपद की कन्या याज्ञसेनी का स्वयंवर है। आप देख रहे हैं। पृथ्वी पर लघु मण्डप के नीचे एक धनुष रखा है। पास में पाँच बाण पड़े हैं। ठीक उसके ऊपर कुम्हार के चक्के की तरह एक चक्र घूम रहा है। उसमें एक छेद है। छेद के ऊपर मत्स्य है। जो व्यक्ति नीचे रखे धनुष पर पाँचों वाणों को योजित कर चक्र-छिद्र से मत्स्य-भेद करेगा, द्रौपदी उसका वरण करेगी। पिताश्री की यही प्रतिज्ञा है। आप अपने पराक्रम का परिचय दें।''

शेष अगले पृष्ठ पर

भाई धृष्टद्युम्न स्वयंवर में आगत राजाओं का परिचय दे रहा था। मैं ध्यान से सुन रही थीं। दुर्योधन, विविंशति, विकर्ण, युयुत्सु, शकुनि, अश्वत्थामा, कर्ण, विराट, सुशर्मा, चेकितान, दु:शासन, पौंड्रक वासुदेव, भगदत्त, शल्य, सोमदत्त, भूरिश्रवा, कृष्ण, बलराम, प्रद्युम्न, सात्यकि, जयद्रथ, शिशुपाल, जरासंध इत्यादि। इनमें से अधिकांश के नाम सुने हुए थे। किन्तु इस सूची में अर्जुन का नाम नहीं था जिससे पिताश्री मेरा विवाह करना चाहते थे।

इनमें से अधिकांश कई स्त्रियों के पति थे। वे एक पत्नी और जोड़ लेना चाहते थे। यह उनकी दिग्विजय की प्रक्रिया का एक अंग है। पर भगदत्त को देखकर हँसी आ गई। यह जरद्गव भी विवाह के इच्छुक हैं। आश्चर्य है कि इनमें से अधिकांश योद्धा कुरुक्षेत्र के युद्ध में भी थे। युद्ध के अवसर पर इनकी भागीदारी का समाचार सुनते समय मुझे अपना स्वयंवर याद आ जाता था। क्या स्वयंवर में ही इस युद्ध का प्रारम्भ था?

अद्भुत धनुष था वह! अपने बल, पौरुष, पराक्रम और सौन्दर्य के दर्प में फूले हुए राजा लोग धनुष के पास जाकर ज्यों ही प्रत्यंचा चढ़ाने का प्रयास करते कि उसके झटके से आहत होकर यहाँ-वहाँ गिर पड़ते—कहीं मुकुट पड़ा होता, कहीं बाजूबंद, कहीं टूटा हुआ हार। फिर वे पराजित मुद्रा में अपनी जगह लौट जाते। जो मत्स्य भेद के लिए नहीं उठ रहे थे वे मुझे देख रहे थे।

धृष्टद्युम्न ने घोषित किया—''मत्स्यभेद के लिए महारथी कर्ण आ रहे हैं।'' मैंने कर्ण को देखा—राजाओं की भीड़ का सर्वाधिक सुन्दर व्यक्ति। सोने के कवच-कुण्डल पर पड़ती हुई सूरज की किरणें भी प्रकाशयुक्त हो उठती थी। कोई भी स्त्री उस पर मुग्ध हो सकती थी। मैंने सोचा वह भी अन्य राजाओं की तरह प्रत्यंचा का झटका नहीं सँभाल सकेगा। किन्तु उसने गेंद की तरह धनुष उठा ली, प्रत्यंचा खींची, उसकी टंकार से मण्डप में हलचल हुई। पाँचों बाणों को भी उसने नियोजित कर लिया। लगा निमिष भर में वह मत्स्य भेद कर लेगा। मैं चिल्ला उठी—''मैं सूतपुत्र का वरण नहीं करूँगी।'' वह आहत मणिधर सर्प की तरह विचलित हो उठा। उस महामनस्वी ने बिना किसी प्रतिक्रिया के धनुष फेंक दिया, बाण तितर-बितर हो गए।

उधर ब्राह्मण मण्डली में हलचल हुई। हल्के मेघ-रंग वाला एक ब्राह्मण खड़ा हुआ—उत्साह और उल्लास से भरा हुआ। ब्राह्मण-मण्डली समवेत स्वर में बोली—''शुभस्तु ते पंथान:।'' शंख बज उठे। ब्राह्मणों के उत्तरीय हिलने लगे। वह सुन्दर बलिष्ठ युवा धीरे-धीरे पूर्ण आत्मविश्वास के साथ मत्स्य-मण्डप की ओर बढ़ रहा था। पलक झपते ही उसने मत्स्य-भेद कर दिया। मत्स्य पृथ्वी पर गिर पड़ा। ब्राह्मण-मण्डली सामगान में निमग्न हो गई। क्षत्रिय राजे चुप थे।

मैं श्वेत पुष्पों की जयमाला लेकर मत्स्य-मण्डप की ओर जाने लगी। चाल में थोड़ी मंथरता आ गई, कपोल देश लज्जारुण हो गए। वरमाला गले में डालते ही शरीर में स्पर्श जन्य स्वेद बढ़ गया, कँपकपी छूटने लगी। उस ब्राह्मण युवा के साथ मैं मण्डप से बाहर निकली। वह स्वयंवर क्या जिसमें युद्ध न हो। एक छोटी-सी लड़ाई जिसमें कर्ण और शल्य दोनों पराजित हुए। कर्ण के बारे में सोचती रही कि केवल पौरुष और धर्म आदमी के सहायक नहीं होते। कुछ और भी होता है। हम लोग स्वयंवर मण्डप से बाहर निकल आए।

हम एक अज्ञात दिशा की ओर चल रहे थे। ऊपर आँख उठाई तो बादल घिरे हुए थे—'मेघाछन्नम् दुर्दिनम्'। कुछ देर एक कुटिया में रुके। वर्षा बन्द हो गई थी। अब हम भाग्यलिपि की तरह टेढ़ी मेढ़ी पगडंडी पर चल रहे थे। आगे-आगे दो ब्राह्मण वीर और पीछे-पीछे मैं। सामने एक कुटिया थी—कुम्हार की। कुम्हार का चक्का तेजी से चल रहा था जीवन के चक्के की तरह। उसने हम लोगों पर ध्यान नहीं दिया और चक्का चलाता रहा। दोनों ब्राह्मणों में से एक बोला—''माँ हम लोग भिक्षा लाए हैं।'' टूटी फूटी खिड़की से आवाज माँ तक पहुँची। उसने भीतर से ही उत्तर दिया—''भुइक्तेति समेत्यसर्वे'' सभी भाई बाँट कर खाओ। मैंने सोचा कि अनजाने यह बात कह दी गई। मैं तो मनोनुकूल वीर पति पाकर फूली न समा रही थी। माँ कुंती मुझे देखकर युधिष्ठिर के पास गई और मत्स्य भेद का रहस्य खोला। फिर उन्होंने अपने कथन ''भुंक्तेति समेत्यसर्वे'' का समाचार दिया। युधिष्ठर चिंतामग्न हो गए।

कुछ देर बाद उनका मौन टूटा—''अर्जुन तुमने इस कन्या को जीता है। तुम्हारे साथ ही इसकी शोभा है। अग्नि प्रज्ज्वलित करो और याज्ञसेनी का पाणिग्रहण करो।'' 'अर्जुन' नाम में अद्भुत जादू था। मेरे आनंद के समुद्र में ज्वार उठा, जीवन का सूखा तट एक अप्रत्याशित क्षण में लहरों में डूब गया—कुछ देर तक डूबा रहा।

ज्वार तो ज्वार ही होता है। आया और गया। अर्जुन बोला—''धर्मराज, बड़े भाई के अविवाहित रहते छोटे का विवाह अधर्म है। यह अनार्य पद्धति है। पहले आपका विवाह होना चाहिए, तब भीम का तब मेरा।'' मेरे मन में कुम्हार का चक्का तेजी से घूम गया। अलात चक्र।

मैंने पाँचों पाण्डवों को देखा। उनकी आँखों में एक मदिर तृष्णा भर गई। उन्होंने फिर एक दूसरे की ओर देखा। मुझे अपने अपरूप सौन्दर्य पर तृप्ति का अनुभव हुआ। पहली बार लगा कि मैं यज्ञकुंड से पैदा हुई और मेरी आग की लपट से कोई बच नहीं सकता। धर्मराज ने मेरी ओर देखते हुए अपना निर्णय सुनाया। ''कल्याणमयी द्रौपदी हम पाँचों भाइयों की भार्या होगी।'' मैंने देखा पाँचों भाइयों के चेहरे पर नन्दन-कानन उग आया था। इसी बीच कृष्ण और बलराम पाण्डवों से मिलने आए। कृष्ण को देखा, देखती रह गई। मेर मन में उनके प्रति सखीत्व का बीज इसी समय पड़ा।

मैं सोच रही थी—दलदल में फँसती जा रही हूँ। अर्जुन की ओर देखा—एक चुप, हजार चुप। एक साथ ही आर्य और अनार्य धर्म दोनों का पालन। रातभर हमलोग कुम्हार के घर ही रहे। पाँचों पाण्डव मृगचर्म बिछा कर सो गए। मैं उनके पैताने कुशासन पर सोई। स्त्रियों का स्थान पुरातन काल से पुरुष के पैरों के नीचे है। यह सनातन धर्म है। हम सनातन धर्म का पालन कर रहे थे।

दूसरे दिन पिताश्री ने हम लोगों को राजभवन में बुला लिया। एक दिन पिता विवाह के मुहूर्त के बारे में युधिष्ठिर से बात कर रहे थे। युधिष्ठिर ने कहा ''विवाह तो मेरा भी होगा''। द्रुपद एकदम हक्का-बक्का। युधिष्ठिर फिर बोल बैठे—''मेरा ही नहीं मेरे अन्य भाइयों का भी होगा। द्रौपदी रत्न है रत्न। उसे हम बाँट कर भोगेंगे।'' द्रुपद ने धैर्य से काम लिया और कहा—''तुम कुन्ती और धृष्टद्युम्न जैसा सोचो।'' गाड़ी के आगे काठ। मेरे बारे में दूसरों को निर्णय करने का क्या अधिकार है? लेकिन कन्या को सनातन धर्म के अनुसार चुप रहना चाहिए।

माता-पिता चाहे जिस खूँटे में बाँध दें। मुझसे पूछा तक नहीं गया। पाँच नदियों के देश की राजकुमारी के पाँच पति होने ही चाहिए। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं चुप क्यों थी? क्या इसलिए कि मैं भारतीय मर्यादा को ढोने वाली कन्या थी? क्या इसलिए कि युधिष्ठिर जो कुछ बोलें वही धर्म है? क्या मेरे भीतर ही तो इस प्रकार के संस्कार नहीं थे? मैं चुप थी।

पता नहीं व्यास ने क्या समझाया कि पिताश्री ने पाँचों पाण्डवों से मेरे विवाह की अनुमति दे दी। मैंने देखा था कि हमारे जीवन की गाड़ी जहाँ कहीं रुकती थी व्यास उपस्थित। वे ऋषि हैं, महात्मा हैं, पाण्डवों के पूर्वज हैं, पाराशर हैं, कहीं भी दिख सकते हैं। लेकिन व्यास के कथन को जिस ढंग से मुझतक पहुँचाया गया वह विश्वसनीय नहीं लगा। वे अपनी महाभारत कथा में एक पात्र के रूप में हस्तक्षेप कर सकते हैं, किन्तु जीवन में उनका हस्तक्षेप हर समय कल्याणकारी कैसे होगा? पर व्यास की बात पर विश्वास करके मेरा विवाह पाँचों पाण्डवों से हो गया।

यहीं आकर मेरी कथा रुक जाती है। मेरा वार्हस्पत्य संस्कार (चार्वाक) करवट बदलता है। मैं अपने गुरु आचार्य वेद को बुलाती हूँ। मैंने आचार्य से निवेदन किया कि व्यास की बातों की पुष्टि के लिए वे भृगु आश्रम जायँ। कदाचित् 'भृगु संहिता' से कुछ भेद खुले। आचार्य हँसे—''तुम न सनातन धर्म को मानती हो न बार्हस्पत्य को। दोनों के बीच में रस्सी पर टँगे नट की तरह झूल रही हो। 'भृगु संहिता' पाखंडियों का आविष्कार है। मैं जाऊँगा। कुछ नए अनुभव, कुछ उलटे-सीधे विचार ले आऊँगा। हो सकता है मेरी 'बार्हस्पत्य संहिता' के लिए कुछ उपयोगी सामग्री भी मिल जाय।''

कृष्ण और महाभारत

कृष्ण जो करना चाहते थे, महाभारतकार के अनुसार, वे असफल हुए। उन्हें उच्च पद से उतार कर घसीटना व्यर्थ है। ....यदि हम उनके विषय में उन्हें निरा मर्त्य मनुष्य मानकर विचार करें तो उनका पलड़ा ऊँचा उठ जाएगा और उन्हें पीछे की तरफ आसन मिलेगा।

जैसा कि आमतौर पर कहा जाता है, महाभारत न तो उपन्यास है, न इतिहास—वह मानव आत्मा का इतिहास है, जिसमें ईश्वर कृष्ण के रूप में मुख्य नायक हैं। उस महाकाव्य में ऐसी कितनी ही बातें हैं, जिनमें मेरी अल्प बुद्धि अवगाहन नहीं कर पाती। अनेक बातें ऐसी हैं जो स्पष्टत: क्षेपक हैं। वह चुना हुआ खजाना नहीं, वह तो एक खान है, जिसे खोदने की जरूरत है, जिसमें गहरे पैठने की जरूरत है। तब कंकड़-पत्थर निकालने पर हीरे हाथ आते हैं। उसमें तो शाश्वत युद्ध का वर्णन है, जो हमारे अन्दर निरन्तर होता रहता है। वह ऐसी सजीव भाषा में किया गया है जिससे कुछ समय के लिए हमारा यह विचार हो जाता है कि उसमें वर्णित कृत्य सचमुच मनुष्यों द्वारा ही किये गये हैं।

—महात्मा गाँधी

उग्र जन्मशताब्दी

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

हिन्दी के कथाकार, हास्य-व्यंग्य-बिखेरक, नाट्य लेखक, अनूठे गद्य-शैलीकार, कवि और देश की आजादी के लिए तन-मन से संघर्षशील पत्रकार पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' का जन्म मीरजापुर जिले के चुनार नगर के सद्दूपुर मुहल्ले के बभन टोली में 29 दिसम्बर, 1900 ई० (पौष शुक्ल 8, संवत् 1957 वि०) में हुआ। उनका पैत्रिक अधिवास चुनार के समीप जलालपुर माफी गाँव रहा है। उनके पिता जलालपुर माफी से आकर चुनार में बस गये थे।

उग्रजी की प्रारम्भिक शिक्षा चुनार तथा कक्षा आठ तक काशी के हिन्दू स्कूल में हुई। साहित्य की समधिक शिक्षा अपने अग्रज उमाचरण पाण्डेय 'त्रिवेणी' से, अलंकार और व्याकरण की लाला भगवानदीन तथा पत्रकारिता की बाबूराव विष्णु पराड़कर से पायी। उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन का आरम्भ कविता से किया। उनकी पहली कविता गोरखपुर से प्रकाशित 'स्वदेश' में 'आह्वान' शीर्षक से 11 अगस्त 1919 में छपी थी। 1920 से वे दैनिक 'आज' के नियमित लेखक बने। उनकी पहली कहानी 'गाँधी आश्रम' शशिमोहन शर्मा के नाम से छपी थी। 1966 तक वे 'आज' में लिखते रहे।

उन्होंने 'उग्र', 'भूत', 'खुदा की राह पर', 'मतवाला', 'वीणा', 'स्वदेश', 'विक्रम', 'संग्राम' और 'हिन्दी पंच' का सम्पादन किया। दिल्ली से उन्होंने 'हिन्दी पंच' का सम्पादन कर हिन्दी के हास्य-व्यंग्य जगत में नया मानक स्थापित किया।

उनकी सभी रचनाएँ उत्कृष्ट हैं किन्तु 'बुधुआ की बेटी', 'चंद हसीनों की खतूत', 'शराबी', 'सरकार तुम्हारी आँखों में', 'चाकलेट', 'महात्मा ईसा' और 'फागुन के दिन चार' विशेष चर्चित हुए।

उग्रजी मुख्यत: राष्ट्रीय विचारधारा के कवि और कथाकार थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में देश को पराधीनता से मुक्ति, सामाजिक एकता, सामाजिक कुरूतियों के निबारण का संदेश दिया है। वे स्वयं मस्तमौला और हँसने-हँसानेवाले व्यक्ति थे। उन्होंने जीवनकाल में 53 कृतियाँ हिन्दी-जगत को दीं।

उग्रजी को लेखक बनाने में उनके प्रारम्भिक जीवन में उनके गाँव जलालपुर माफी के निवासी तथा दैनिक 'आज' के प्रथम व्यवस्थापक पंडित छविनाथ पाण्डेय का सबसे बड़ा योगदान था। उग्रजी का अन्तिम समय दिल्ली में बीता। उनके उस कष्टमय जीवन में उनके गाँव के निवासी तथा दिल्ली के प्राच्य विद्या के प्रकाशक नाग पब्लिकेशन के संचालक नागशरण सिंह ने उनकी सेवा की। हिन्दी के उस अनूठे कृतिकार ने 23 मार्च, 1967 को लोकलीला छोड़ परलोक-गमन किया। **—डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह**

भारतीय गणतंत्र में हिन्दी
दशा और दिशा

संविधान-सभा ने 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को भारत-संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इसके विकास, प्रचार-प्रस्तार के लिए तब से अब तक अनेक कदम उठाये गये। 1955 में बी०जी० खेर की अध्यक्षता में आयोग गठित किया गया। आयोग ने 1957 में अपनी रिपोर्ट सरकार को दी और संविधान के अनुच्छेदानुसार रिपोर्ट पर विचार के लिए तत्कालीन गृहमंत्री गोविन्दवल्लभ पन्त की अध्यक्षता में संसदीय समिति गठित की गयी। संसदीय समिति की रिपोर्ट पर संसद में बहस हुई। बहस के उत्तर में प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने संसद को आश्वासन दिया कि अंग्रेजी को सह भाषा के रूप में प्रयोग में लाये जाने के लिए कोई व्यवधान उत्पन्न नहीं किया जायेगा, न ही इसके लिए कोई समय-सीमा निर्धारित की जायेगी।

हिन्दी के राजभाषा बने पचास वर्ष हो गये। प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हम 'हिन्दी दिवस' भी मनाते हैं, किन्तु आजतक हिन्दी राजभाषा के रूप में सुप्रतिष्ठित नहीं हुई। इसके अनेक कारण हैं, कुछ राजनीतिक और कुछ प्रशासकीय। समय-समय पर केन्द्र ने जो-जो नियम-उपनियम बनाये, उनका मनोयोगपूर्वक अनुपालन नहीं किया गया जिससे राजभाषा अभी तक अधर में लटकी हुई है। बार-बार नारे उठते हैं कि हिन्दी को राष्ट्रसंघ में भाषा का दरजा दिया जाय। इसका क्या अर्थ है? घर में दीप जलाने पर मस्जिद में दीया जलाने की लोकोक्ति क्या चरितार्थ नहीं होती?

विश्व की भाषाओं में तीसरी सबसे बड़ी संख्या में बोली जानेवाली भाषा हिन्दी है। इस तथ्य और सत्य के बावजूद हिन्दी अपने ही घर में बेचारी बनकर रह रही है। प्रसन्नता का विषय है कि नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली ने इस दिशा में पहल की है। उसने हिन्दी की दिशा और दशा के अनुचिन्तन का सार्थक प्रयास किया है। सम्भव है, इससे राजसत्ता के शिखर पर बैठे प्रशासकों का ध्यान इस हीन दशा पर जायेगा और सही दिशा में सही कदम वे उठायेंगे। हिन्दी-हितैषियों के लिए यह पुस्तक अवश्य पठनीय है। उपर्युक्त पुस्तकालय के निदेशक श्री ओमप्रकाश केजरीवाल को श्रेय है जिन्होंने सामयिक चर्चा के अन्तर्गत इस राष्ट्रीय प्रश्न पर ध्यान आकृष्ट किया है। **—पारसनाथ सिंह**

पुस्तक : भारतीय गणतंत्र में हिन्दी
दशा और दिशा
प्रकाशक : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली
[पृष्ठ संख्या 254, मूल्य 350 रुपये]

बिन्दु बिन्दु विचार

प्रयाग महाकुम्भ जनमानस के लिए धार्मिक आस्था एवं विश्वास का प्रतीक है। तथाकथित धर्म निरपेक्ष राजनीतिज्ञों ने महाकुम्भ को राजनीति सापेक्ष बना दिया। देव और दानव दोनों ही अमृत कुम्भ जो राजनीति का प्रतीक बन गया है, से लाभान्वित होने का प्रयास करते रहे। धार्मिक प्रवचनों से अधिक राजनीतिक प्रवचनों का विवरण मीडिया से प्रकाशित होता रहा। आज धर्म निरपेक्ष की परिभाषा राजनीति सापेक्ष हो गई है।

❑❑

सूचना प्रौद्योगिकी आज स्कूली शिक्षा को इतनी जड़ता तक प्रभावित कर रही है, कि वह बच्चों के मस्तिष्क को कम्प्यूटर आधारित करती जा रही है। बडोदरा में किंडर गार्टन स्तर से बच्चों को ए बी सी डी भी कम्प्यूटर पर पढ़ाने की योजना है। कम्प्यूटर पर बच्चे A यानी ASCIL, B यानी Basic, C यानी कोरेलड्रा।

यह शिक्षा बच्चों की प्रतिभा कुंठित कर उनकी संवेदना को प्रभावित करेगी। उन्हें हाथ से लिखने का अभ्यास नहीं होगा, प्रत्येक लेखन के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग होगा। यदि ऐसा रहा तो मनुष्य कम्प्यूटर से पराजित होगा, उसकी सहज नैसर्गिक क्षमता प्रतिभा लुप्त हो जायगा।

❑❑

पाकिस्तान में क्या पंजाबियों को स्कूल में अपनी मातृभाषा पंजाबी पढ़ने का अधिकार है ? नहीं, पाकिस्तान में स्कूल में उर्दू और अंग्रेजी पढ़ाई जाती है। यदि पंजाबी बोलते हैं तो उन्हें मार खानी पड़ती है।

❑❑

हिन्दी जो देश की राष्ट्र भाषा है उसकी उपेक्षा हो रही है। जिसे जो अधिकार दिये गये वह उसी का दुरुपयोग कर रहा है। गाँधीजी का स्पष्ट मानना था कि कर्त्तव्य पहले और अधिकार बाद में। परन्तु यहाँ तो कर्त्तव्य कहीं दिखाई नहीं दे रहा और उल्टे अधिकार की दुहाई दी जा रही है।

साहित्य के क्षेत्र में निरन्तर विकास हो रहा है। परन्तु संस्कृति में ह्रास हुआ है। राष्ट्रीय स्तर पर एक मात्र भारतीय संस्कृति होनी चाहिए।

— विष्णु प्रभाकर

❑❑

''बीसवीं सदी का चीनी साहित्य बार-बार उजड़ा। इसका लगभग दम घोंट दिया गया, क्योंकि इसे राजनीति निर्देश देती रही। साहित्य में क्रान्ति और क्रान्तिकारी साहित्य दोनों ने साहित्य और व्यक्ति को मौत की सजा सुना दी। क्रान्ति के नाम पर पारम्परिक चीनी संस्कृति पर किए आघात ने पुस्तकों को जलाने का काम किया। पिछले सौ वर्ष में वहाँ असंख्य लेखकों को गोली मार दी गयी, जेल भेज दिया गया, निर्वासित किया गया या कठोर श्रम की सजाएँ दी गयीं। यह चीन के इतिहास में किसी भी राजतंत्र की तुलना में अधिक कष्टकर था। चीन में लेखन और उससे भी अधिक रचनात्मक आजादी के लिए इसने बेहद कठिनाइयाँ पैदा कीं। वहाँ यदि लेखक बौद्धिक आजादी चाहता तो दो ही विकल्प थे—या तो चुप रहे या वहाँ से पलायन। पर लेखक भाषा पर निर्भर होता है, और लम्बे समय तक चुप रहना आत्महत्या के ही समान है। जो लेखक आत्महत्या से बचना और अपनी बात कहना चाहते उनके पास निर्वासन में जाने के अलावा कोई चारा न था।''

— 12 दिसम्बर, 2000 को नोबल पुरस्कार स्वीकार करते समय, चीनी लेखक, गाओ जिग जियान द्वारा दिये व्याख्यान से

❑❑

शिक्षा की कसौटी है, शिक्षार्थी का सर्वतोमुखी विकास। राष्ट्रीय चेतना से रहित कैसी भी शिक्षा चाहे जितनी भी आधुनिक हो, निरर्थक है। भविष्य के नागरिक का यदि संतुलित विकास न हुआ तो शिक्षा सम्बन्धी सारा व्यय, अपव्यय है। विशेष रूप से उच्च शिक्षा में नित्य नए प्रयोगों के चलते देश की शिक्षा में परिवर्तन लाने के पूर्व हमें स्पष्टत: समझना चाहिए कि हम भविष्य के राष्ट्रीय नागरिक को कैसा बनाना चाहते हैं ? हम स्पष्टत: देख सकते हैं कि स्नातकोत्तर स्तर तक की शिक्षा ग्रहण करने के बाद भी अधिकांश विद्यार्थी मानव की सुसुप्त क्षमताओं और चेतना के विकास में सर्वथा वंचित रहते हैं। उच्चस्थ डिग्री लेने के बाद भी नवयुवकों की ज्ञानशून्यता चिल्ला-चिल्ला कर बोलती देखी जा सकती है। नवयुवकों का भविष्य अंधकारमय है। फिर देश का भविष्य सुखद कैसे हो सकता है ? यह विचारणीय है।

— डॉ० देवर्षि शर्मा

❑❑

पुस्तकों का संकलन ही आधुनिक युग में वास्तविक पाठशालायें हैं। पुस्तक आदमी के अनुभवों का संकलन है। कविता हो अथवा उपन्यास हो, हर किसी में आदमी के अनुभवों का सार्थक सार संकलित होता है, जिसे पढ़कर उन अनुभवों का लाभ उठाया जा सकता है। **— कालविन**

❑❑

अच्छी पुस्तक वह है, जो आशा के साथ खोली जाये और लाभ के साथ बन्द की जाये।

अच्छी पुस्तकें वे हैं जिनके अध्ययन से हमें सद्कार्य करने की प्रेरणा मिले, हमारा ज्ञानवर्द्धन हो और हमारी सोच को सही दिशा मिले। अच्छी पुस्तकें हमारी जीवन दृष्टि को व्यापक, सहिष्णु और उदार बनाती है तथा हमें और जागरूक और उदार बनाने को प्रेरित करती है। **— एमो ब्रांसन एलकाट**

❑❑

पुस्तकें हमारे एकान्त की सबसे विश्वसनीय साथी होती हैं। पुस्तकों से प्रेम करने वाले व्यक्ति को कभी खालीपन और अकेलेपन की अनुभूति नहीं होती। **— कोलटन**

अंतरराष्ट्रीय कबीर सम्मेलन

किसी कैरीबियन देश में पहली बार आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कबीर सम्मेलन इस संकल्प के साथ सम्पन्न हुआ कि संत कबीर के विचार और दर्शन को संसार भर में फैलाने के प्रयास किए जायँ क्योंकि उनमें सच्ची मानव एकता, भाईचारे और विश्व शान्ति का संदेश है और यही अणु बमों की आत्मघाती कोशिशों, सर्वव्यापी आतंकवाद और युद्ध उन्माद के सच्चे जवाब हैं।

इस सम्मेलन का आयोजन ट्रिनिडाड टोबैगो की सत्य कबीर निधि ने प्रसिद्ध संत कवि की छठी शताब्दी के उपलक्ष्य में किया। सम्मेलन के मुख्य संरक्षक इस देश के अत्यन्त लोकप्रिय विद्वान् प्रो० हरिशंकर आदेश थे। ट्रिनिडाड और भारत सहित नौ देशों के विद्वानों ने भाग लेकर संत कबीर के काव्य दर्शन और उनके सामाजिक अवदान पर 25 आलेख प्रस्तुत किए। पाँच सदस्यीय भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व कबीर काव्य परम्परा की प्रसिद्ध कवियित्री डॉ० मधुरिमा सिंह ने किया, जिनको संत कबीर सम्मान भी प्राप्त हुआ। ट्रिनिडाड टोबैगो में भारतीय राजदूत डॉ० परिमलकुमार दास ने उद्घाटन भाषण में कबीर के सर्वमान्य संदेश को पहले से अधिक प्रासंगिक बताया और कहा आज के संसार को ऐसे ही संदेश की जरूरत है जो संत कबीर की कविता में भरपूर हैं। अंतरराष्ट्रीय सलाहकार श्री लल्लनप्रसाद व्यास ने समापन भाषण में कहा कि भक्ति में वह शक्ति है जो वर्तमान समय में सम्पूर्ण मानवता की नियति बदलकर उसकी पूरी रक्षा करने में समर्थ है। भक्ति की यह शक्ति कबीर और तुलसीदास जैसे सिद्ध संत कवियों के साहित्य में भरी है। विश्व उससे लाभ उठाए।

असंसदीय अभिव्यक्ति कोश

लोकसभा सचिवालय ने सांसदों द्वारा संसद में प्रयुक्त असंसदीय शब्द तथा भाषा का कोश प्रकाशित किया है। 500 पृष्ठों का यह कोश 1,160 रुपये में उपलब्ध है। हमारे सांसद संसद में किन शब्दावली और भाषा का प्रयोग करते हैं उसके उत्कृष्ट नमूने कोश में संगृहीत हैं।

यह कोश देश की राजनीति और सांसदों के बौद्धिक पतन का द्योतक है। जनमानस आज दूरदर्शन पर सांसदों की अशिष्ट भाषा और आचरण को देखकर क्या सबक ले रहा है ?

विश्व में हिन्दी भाषा

विश्व में चीनी भाषा के बाद दूसरा स्थान हिन्दी भाषा का है। मातृभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार करने वालों की संख्या 33 करोड़ 72 लाख, 72 हजार 114 है, तथा उर्दू को मातृभाषा के रूप में स्वीकार करने वालों की संख्या चार करोड़ 34 लाख छ: हजार 932 है। **— प्रो० महावीर सरन जैन**

निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान
आगरा

सम्मान-पुरस्कार

मध्य प्रदेश शासन के संस्कृति विभाग ने वर्ष 2000-2001 के लिए निम्नलिखित पुरस्कार तथा प्रतिष्ठापूर्ण सम्मानों की घोषणा की है—

अखिल भारतीय कबीर सम्मान उड़िया कवि **सीताकांत महापात्र** को (डेढ़ लाख), मैथिलीशरण गुप्त सम्मान **भीष्म साहनी** को (एक लाख) तथा शरद जोशी सम्मान **काशीनाथ सिंह** को (इक्यावन हजार) प्रदान किया जायेगा।

साहित्य के क्षेत्र में राज्यस्तरीय शिखर सम्मान भोपाल के **मंजूर एहतेशाम** को (इकतीस हजार) दिया जायगा। सम्मान पुरस्कार 13 फरवरी को भोपाल में आयोजित अलंकरण समारोह में दिये जायेंगे।

पहल पुरस्कार

हिन्दी के वरिष्ठ कवि **नरेश सक्सेना** को वर्ष 2000 के लिए 'पहल' पत्रिका द्वारा 'पहल पुरस्कार' प्रदान किया जायगा। इस पुरस्कार के अन्तर्गत ग्यारह हजार रुपये की राशि, प्रशस्ति पत्र तथा प्रतीक चिन्ह दिया जाता है।

बिड़ला फेलोशिप

हिन्दी के कथाकार **महीप सिंह** और मराठी लेखक **प्रो० युसूफ खान मोहम्मद, खान पठान** को 2000-2001 के के०के० बिड़ला फाउंडेशन फेलोशिप के लिए चुना गया है। ये दोनों लेखक तुलनात्मक भारतीय साहित्य पर शोध करेंगे। फाउंडेशन द्वारा जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार दोनों लेखकों को फैलोशिप में प्रतिमाह चौदह हजार रुपये तथा 40 हजार रुपये आयात अनुदान मिलेगा। फेलोशिप की अवधि एक साल की होगी। सुप्रसिद्ध बंगला लेखिका नवनीता देवसन की अध्यक्षता में निर्णायक मंडल में इन लेखकों का चयन किया।

कथा साहित्य व अनुवाद पुरस्कार

कथा साहित्य व अनुवाद के लिए 14 भाषाओं के 29 लेखकों व अनुवादकों को पुरस्कृत किया गया।

डोंगरी भाषा में लिखी गई लघु कथा 'कर्फ्यू' के लेखक **मनोज** व इसके अनुवादक **शिवनाथ** को कथा पुरस्कार के लिए चुना गया है। इस वर्ष के 'ए०के० रामानुजम पुरस्कार' के लिए **सारा राय** को चुना गया है। गुजराती लेखक **झावेरचंद मेघाणी** को 'कथाकारी पुरस्कार' के लिए चुना गया है। इन्हें यह पुरस्कार सौराष्ट्र के गारसिया समुदाय का जीवंत वर्णन के लिए दिया गया है। प्रत्येक विजेता को 2,200 रुपये नकद व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। प्रसिद्ध मलयालम लेखक व ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता एम०टी० वासुदेवन नायर ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया।

जिन अन्य लोगों को इस पुरस्कार के लिए चुना गया है, उनमें **कुलु सैकिया** (असमिया), **गौतम सेनगुप्ता** और **सोहराब हुसेन** (बंगला), **झावेरचंद मेघानी** (गुजराती), **रामकुमार तिवारी** (हिन्दी), **राजमोहन झा** (मैथिली), **के०पी० रामनकुन्नी** और **सिथारा** (मलयालम), **लंबम वीरमानी** (मणिपुरी), **आशा कारदालिया** (मराठी), **रामचंद्रा बेहेरा** (उड़िया), **मोतीलाल जोटवानी** (सिंधी), **पेरुमल मुरुगन** और **पुहाझ** (तमिल), **वी० चंद्रशेखर राव** (तेलुगू), और **साजिद राशिद** (उर्दू) शामिल हैं।

पुरस्कार के लिए चुने गए अनुवादकों में **रंजीता विश्वास** (असमिया), **एनाक्षी चटर्जी** (बंगला), **विनोद मेघानी** (गुजराती), **सारा राय** (हिन्दी व उर्दू), **सुशांत कुमार मिश्र** (मैथिली), **गीता कृष्णनकुट्टी** और **डी० कृष्णनअय्यर** (मलयालम), **आई०आर० बाबू सिंह** (मणिपुरी), **कीर्ति रामचंद्रन** (मराठी), **महाश्वेता बक्षीपात्रा** (उड़िया), **नंदलाल जोटवानी** (सिंधी), **एच० इस्त्राइल** (तमिल), **प्रणव मंजरी** (तेलुगू) शामिल हैं।

उपन्यासकार नील को 'विट ब्रेड बुक' पुरस्कार

उपन्यासकार **मैथ्यू नील** को अपने अंग्रेजी उपन्यास 'इंग्लिश पैसेंजर्स' के लिए इस वर्ष प्रतिष्ठित 'विट ब्रेड बुक' अवार्ड मिला है। यह उपन्यास 19वीं सदी के अंग्रेज के तस्मानिया की साहसिक यात्रा पर आधारित है।

नील की यह किताब ब्रिटेन में युद्ध के बाद लोरना सेज की दुखद जीवन गाथा पर आधारित है जिसकी मौत 57 वर्ष की आयु में 11 जनवरी को हुई थी। नील ने 25 हजार पौंड (33,800 डालर) की पुरस्कार राशि प्राप्त करने के बाद कहा कि यह पुरस्कार केवल धनराशि के लिए नहीं, बल्कि प्रतिष्ठित होने के कारण भी उनके लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है।

सम्मानित साहित्यकार तथा शिक्षाविद्

गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रमुख साहित्यकारों तथा शिक्षाविदों को पद्मविभूषण तथा पद्श्री से सम्मानित किया गया है—

पद्म विभूषण : जान गैलब्रेथ (साहित्य एवं शिक्षा, अमेरिका), **के० सदचिदानंद मूर्ति** (साहित्य एवं शिक्षा, गुंटुर)।

पद्मश्री : प्रोफेसर बाला बी० बालाचन्द्रन (साहित्य एवं शिक्षा, अमेरिका), **डॉ० भवेन्द्रनाथ सैकिया** (साहित्य एवं शिक्षा, गुवाहाटी), **डॉ० चन्द्रशेखर बी० कम्बर** (साहित्य एवं शिक्षा, बंगलोर), **डॉ० डी० जाबरे गौड़ा** (साहित्य एवं शिक्षा, मैसूर), **श्रीमती जिलानी बानो** (साहित्य एवं शिक्षा, आन्ध्र प्रदेश), **श्री कालिदास गुप्त रिजा** (उर्दू कविता, मुम्बई), **श्री मनोजदास** (साहित्य एवं शिक्षा, पांडिचेरी), **श्रीमती पदमा सचदेव** (काव्य, दिल्ली), **डॉक्टर रवीन्द्रकुमार** (साहित्य एवं शिक्षा, उत्तर प्रदेश), **डॉक्टर एस०टी० ज्ञानंद** (तेलुगु काव्य, आन्ध्र प्रदेश)।

साहित्य भारती सम्मान

प्रसिद्ध उड़िया साहित्यकार व उड़ीसा साहित्य अकादमी के अध्यक्ष **पठानी पटनायक** को राज्य के सर्वोच्च साहित्य भारती सम्मान से पुरस्कृत किया गया है।

मूर्धन्य लेखक **श्री विष्णु प्रभाकर** अनेक संघर्ष के पश्चात, निजी मकान पर कब्जा पा सके, जिसे उनके ही किरायेदार ने अपने नाम करा लिया था। संसद से लेकर मीडिया तक में गुहार लगाई, अन्त में एक साहित्यिक पुलिस अधिकारी ने सहायता की और जीवन के 6 दशक 818 कुण्डेवालान में बिताने के बाद अपने निजी आवास में प्रविष्ट हुए। श्री विष्णु प्रभाकर अपने निजी आवास में कितनी शान्ति का अनुभव कर रहे हैं, वह इस पत्र से परिलक्षित है—

बी०-151, महाराणा प्रताप एन्क्लेव,
पीतमपुरा, दिल्ली-110 034
फोन : 7156721

2.1.2001

प्रिय आत्मन,

आशा करता हूँ आप स्वस्थ व प्रसन्न हैं, आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि लम्बे संघर्ष के बाद मैं अपने मकान में आ गया हूँ। मेरा नया पता व फोन नम्बर ऊपर दिया हुआ है। कृपया अब इसी पते पर लिखिए।

अभी हम यहाँ पूरी तरह से व्यवस्थित नहीं हुए हैं। फर्नीचर बन रहा है, एक-दो हफ्ते और लग सकते हैं। काम पूरा होने पर आपको सूचना दूँगा। वैसे आप अब भी आ सकते हैं।

यहाँ बड़ा खुला वातावरण है, धूप है, हवा है, पेड़-पौधे हैं, सामने ही पार्क है—अच्छा लगता है, जीवन के शेष क्षण इसी वातावरण में बीतेंगे यह और भी अच्छी बात है।

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

आपका

विष्णु प्रभाकर

भारत को गौरवपूर्ण उत्तराधिकार के रूप में संस्कृत प्राप्त हुई है। इसने राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधा है और इस भाषा के द्वारा जो संस्कृति प्रवाहित हुई, उसमें सम्पूर्ण मानव-सभ्यता के क्षेत्र में चमत्कारपूर्ण योगदान दिया है।

—प्रोफेसर हीरेन मुखर्जी

हिन्दी-पत्रिकाएँ

कसौटी

बिहार से पिछले दो तीन दशकों में अनियतकालिक पत्र-पत्रिकाओं का बड़े पैमाने पर प्रकाशन हुआ है। जिसका कहीं कोई विवरण नहीं प्रस्तुत किया गया। पर इन पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी साहित्य की पर्याप्त सामग्री पाठकों के सामने आयी हैं। वैसे बिहार से गत शती के चौथे-पाँचवें दशक में दर्जनों साहित्यिक पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही थीं, बीच में वह प्रवाह रुक सा गया था। डॉ० नन्दकिशोर नवल के सम्पादकत्व में '**कसौटी**' का प्रकाशन शुभ लक्षण है।

'**कसौटी**' का पाँचवां अंग मेरे समक्ष है। यह पत्रिका साहित्य की विभिन्न विधाओं पर गम्भीर साहित्यिक सामग्री प्रस्तुत कर रही है। समीक्षा, पुस्तक समीक्षा, कविता, लेख, नाटक तथा रंगमंच के साथ रचनाओं पर पाठक की प्रतिक्रिया भी प्रस्तुत की गयी है। कुल मिलाकर यह पत्रिका पठनीय और हिन्दी की आधुनिक साहित्यिक गतिविधियों की जानकारी देने वाली उच्चस्तरीय पत्रिका है।

किसी भी पत्रिका की आत्मा उसका सम्पादकीय होता है। इस सम्पादकीय से ही सम्पादक के सम्पादन कला का ज्ञान, उसके बहुश्रुत होने का तथा पत्रिका के स्तर का पता चलता है। नवलजी ने 'पीछे की ओर खुलने वाली खिड़की' शीर्षक सम्पादकीय से शिवदान सिंह चौहान पर जानकारी प्रस्तुत कर पाठकों की जिज्ञासा की बहुत बड़ी पूर्ति की है। साथ ही सम्पादक ने प्रस्तुत अंक में लेखों के चयन के बारे में जानकारी देकर सम्पादक-कर्म को सम्पन्न किया है।

यह पत्रिका पठनीय, संग्रहणीय है तथा इसका मुद्रण निर्दोष तथा आवरण चित्ताकर्षक है। इसके लिए सम्पादक और प्रकाशक दोनों ही बधाई के पात्र हैं।

कसौटी, सं०—नन्दकिशोर नवल
पुनश्च, 303 पवन पुत्र अपार्टमेंट, फ्रेजर रोड, पटना

परिचय

हिन्दी में स्वतन्त्र पत्रकारिता का बड़ी तेजी से विकास हुआ। इस पत्रकारिता के माध्यम से पत्रकारिता के बजाय हिन्दी साहित्य के विभिन्न विधाओं का व्यापक स्वरूप पाठकों के समक्ष आया है। ऐसी पत्रिकाएँ काफी संख्या में निकल रही हैं। कुछ पत्रिकाएँ समय की सीमाओं में प्रकाशित होती हैं। आलोच्य पत्रिका '**परिचय**' अर्द्धवार्षिक पत्रिका है। 'परिचय' का प्रथम अंक है। गाजीपुर से इसका प्रकाशन हुआ है।

इस पत्रिका में साहित्य की विभिन्न विधाओं पर सामग्री प्रस्तुत की गई है। इसमें कविता भी है, कहानी भी। समीक्षात्मक लेख और नवप्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा भी प्रस्तुत की गई है।

गाजीपुर से साहित्यिक गतिविधियों को मूर्तरूप देने का यह प्रयास स्तुत्य है। पत्रिका का प्रथम अंक पठनीय, आकर्षक और संग्रह योग्य है। सम्पादक का यह प्रयास प्रशंसनीय है।

आज जरूरत है कि लघु पत्रिकाओं का एक क्रियाशील संगठन बने, जो स्तरीय पत्रिकाओं के साथ-साथ स्तरहीन पत्रिकाओं का भी चयन करे और सम्पादक से अनुरोध करके उसे बन्द करवाने की कोशिश करे, ताकि साहित्य और पाठक दोनों का भला हो सके। **— अनंत विजय**

स्मृति शेष

गौर किशोर घोष का निधन

जाने माने पत्रकार, लेखक और मैगसेसे पुरस्कार विजेता **गौर किशोर घोष** का पन्द्रह दिसम्बर को दिल का दौरा पड़ने से कलकत्ता में निधन हो गया। वे 78 वर्ष के थे। वे बंगला दैनिक 'आजकल' के संस्थापक सम्पादक थे। उन्होंने 30 किताबें लिखीं। आपातकाल का विरोध करने के कारण 1975 में वे जेल गये थे। अपने 50 साल के पत्रकारिता जीवन में उन्होंने बांगला दैनिक आनन्द बाजार पत्रिका में संयुक्त सम्पादक के तौर पर काम किया। पत्रकारिता में खास योगदान के लिए उन्हें देश-विदेश के विभिन्न संगठनों से कई पुरस्कार मिले।

श्रीकान्त जोशी

पं० माखनलाल चतुर्वेदी (एक भारतीय आत्मा) ग्रंथावली के सम्पादक प्रो० श्रीकान्त जोशी मेरे परम आत्मीय का जनवरी के प्रथम सप्ताह में पत्र प्राप्त हुआ जिसमें उन्होंने पं० माखनलाल चतुर्वेदी की साहित्य विधाओं पर विभिन्न विद्वानों के लेखों का संग्रह करने की इच्छा व्यक्त की थी, उसमें कतिपय महत्त्वपूर्ण पत्र भी सम्मिलित करने की योजना थी। मैंने उन्हें 20 जनवरी के अपने पत्र में सामग्री एकत्र कर भेजने का अनुरोध किया था। इसी बीच सहसा जोशी जी के जामाता श्री उत्पल बैनर्जी, हिन्दी विभाग, डेली कालेज, इन्दौर का 24 जनवरी, 2001 का पत्र, साथ में जोशीजी के चिरंजीव श्री आशुतोष जोशी का शोक पत्र प्राप्त हुआ जिसमें 20 जनवरी, 2001 को श्रीकान्त जोशी के हृदयाघात से निधन का समाचार है। यह समाचार स्तब्धकारक था, इतने सक्रिय अध्येता, लेखक, कवि 'एक भारतीय आत्मा' की रचनाओं के जागरूक सम्पादक का इस प्रकार चला जाना अत्यन्त स्तब्धकारक है, हिन्दी साहित्य जगत की घोर क्षति है। आशुतोष भगवान उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें और उनके परिवार को यह दुःख वहन करने की क्षमता दें। **—पुरुषोत्तमदास मोदी**

प्रकाशित पत्रिकाएँ

परख (अर्द्धवार्षिक)
सम्पादक : कृष्ण मोहन
सम्पर्क, एल०आई०जी०-21
ए०डी०ए० कालोनी, रसूलाबाद
इलाहाबाद-211 004
(एक प्रति 20.00, वार्षिक 100.00)

शेष-19 (त्रैमासिक)
सम्पादक : हसन जमाल
सम्पर्क, पन्ना निवास के सामने, लोहारपुरा
जोधपुर (राजस्थान)-342 002
(एक प्रति 20.00, वार्षिक 75.00)

लोर्का (त्रैमासिक)
सम्पादक : प्रभाती नौटियाल
सम्पर्क, फुंदासियोगन इस्पानिका, 3050
बी-4, अरुणा आसफ अली मार्ग, बसन्तकुंज
नई दिल्ली-70
(एक प्रति 20.00, वार्षिक 70.00)

पुनश्च (त्रैमासिक)
सम्पादक : दिनेश द्विवेदी
सम्पर्क, द्वारा-श्रीमती अलका पाण्डेय
सी-3/51, सादतपुर
दिल्ली-1100094
(सहयोग राशि 70.00)

गुड़िया-न्यूज लाइन (त्रैमासिक)
सम्पादक : अजीत सिंह
सम्पर्क, एस-8/395, खजुरी कालोनी
वाराणसी-2
(एक प्रति 12.00, वार्षिक 40.00)

अभिप्राय
सम्पादक : राजेन्द्र कुमार
सम्पर्क, बंद रोड, (एलनगंज)
इलाहाबाद

पत्रकार सदन (त्रैमासिक)
सम्पादक : अफजाल अंसारी
सम्पर्क, सी०सी० 13, से०सी० अलीगंज
लखनऊ-24
(20.00)

लोर्का
सम्पादक : प्रभाती नौटियाल
सम्पर्क, 3050, बी०-4, अरुणा आसफ अली मार्ग, वसन्तकुंज, नई दिल्ली
(20.00)

वर्तमान साहित्य (मासिक)
सम्पादक : से०रा० यात्री, विभूतिनारायण राय
सम्पर्क, 109 रिश्पालपुरी, गाजियाबाद
(एक प्रति 18.00, वार्षिक 160.00)

निष्कर्णी (त्रैमासिक)
सम्पादक : गिरीशचंद श्रीवास्तव
सम्पर्क, 59 खैराबाद, दरियापुर रोड
सुलतानपुर-1
(प्रति अंक 15.00)

कबीर साहित्य के मर्मज्ञ डॉ० रामचन्द्र तिवारी की नई कृति

कबीर और भारतीय संत साहित्य

कबीर मध्यकालीन भक्ति-आन्दोलन के केन्द्र-बिन्दु हैं। उनका व्यक्तित्व अद्वितीय है। इस आन्दोलन की प्रत्येक हिलोर उनसे टकराती है। वे सभी से भींगते हैं। किन्तु कमल-पत्र की तरह सभी हिलोरों के ऊपर दिखाई देते हैं। वे योगी भी हैं, भक्त भी। सूफी भी हैं, संत भी। निर्गुण भी, सगुण भी। और निर्गुण-सगुण से परे भी। वे हिन्दुओं के भी हैं, मुसलमानों के भी; किन्तु न हिन्दू हैं, न मुसलमान। उनका स्वामी 'राम' भी है, 'रहीम' भी। 'केशव' भी है, 'करीम' भी। 'सहज' भी है, 'शून्य' भी। वह सर्वत्र है और सब में है। उसे किसी नाम से पुकार सकते हैं।

वे अतीत भी हैं, वर्तमान भी। वे पन्द्रहवीं शती के हैं, बीसवीं के भी। देश-काल-बद्ध भी हैं, मुक्त भी। जीवित भी हैं, मृतक भी। वे गृही भी हैं और त्यागी भी। वे न घर जोड़ते हैं, न घर छोड़ते हैं। वे रहस्यदर्शी भी हैं, यथार्थदर्शी भी। हद्दी भी हैं, बेहद्दी भी। वे हैं भी, नहीं भी हैं।

वे सुखी भी हैं, दु:खी भी। सुखी हैं कि उन्हें तत्त्वबोध हो गया है। उन्होंने जीवन और मृत्यु के रहस्य को समझ लिया है। दु:खी हैं कि सारा संसार जड़ता में जी रहा है। माया ने सभी को ग्रस लिया है। सभी अँधेरे में टटोल रहे हैं। खाने और सोने को ही जिन्दगी समझते हैं। उनका दु:ख, अपना दु:ख नहीं है। संसार का दु:ख है।

उन्होंने 'शब्द' कहे। उनके गुरु ने भी उन्हें शब्द-बाण ही मारा था। वे 'शब्द' के मर्म को समझते थे। उन्हें आँखों देखी पर विश्वास था, कागद-लेखी पर नहीं। हाँ, देखते वे ज्ञान की आँखों से थे। विवेक ही उनका मार्ग-दर्शक था। उन्हें न 'लोक' की चिन्ता थी, न 'वेद' की। 'लोक' तो 'मति का भोरा' होता है और 'वेद' भी विवेक के अभाव में बंधन बन जाता है। इसलिए वे आँखों देखी कहते रहे। लिखा हुआ कुछ भी नहीं। किन्तु आज, उनकी वाणियों की लिखित परम्परा भी है, और मौखिक भी। हम दोनों में उन्हें ढूँढ़ते हैं। अपनी सीमाओं में कैद करना चाहते हैं किन्तु वे हैं कि दोनों में हैं और दोनों के परे भी। लक्षित भी, अलक्षित भी।

ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व के विषय में कुछ कहना, उसे समझने का प्रयत्न करना और उसके महत्त्व का उद्घाटन करना आसान नहीं है। आसान इसलिए भी नहीं कि हमारा कद उनसे बहुत छोटा है। कहने को हम विज्ञान के युग में जी रहे हैं। संसार का सारा रहस्य हमारी मुट्ठी में है। लेकिन सच्चाई यह है कि हम क्रमश: मनुष्यता से दूर होते जा रहे हैं। संसार की भौतिक सीमायें सिमटती जा रही हैं किन्तु मानसिक दूरियाँ बढ़ती जा रही हैं। मन के स्तर पर हम अनेक तरह के भेद-प्रभेदों में सिमटकर छोटे होते गए हैं। कबीर से हमारी दूरियाँ बढ़ती गई हैं। गनीमत है कि हमारी संवेदना अभी कहीं न कहीं जीवित है। इसलिए हमें कबीर की चिन्ता है। और हम उन्हें समझने की कोशिश कर रहे हैं। विश्वास कर रहे हैं कि उनका होना आज हमारे लिए बेहद जरूरी है।

प्रस्तुत कृति कबीर को समझने के प्रयत्न में लिखी गई है। इसमें समय-समय पर कबीर और संत-साहित्य पर लिखे गए निबन्ध संगृहीत हैं। कई निबन्ध उनकी छ: सौवीं जयन्ती के उपलक्ष्य में उन्हें याद करते हुए लिखे गए हैं। निबन्धों के विषय-वैविध्य है किन्तु सभी का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में कबीर और उनकी परम्परा से है। इन्हें पढ़कर पाठकों को कबीर को समझने में कुछ भी मदद मिली तो हमें संतोष होगा। हमारा श्रम सार्थक होगा।

विषय-सूची

1. मध्यकालीन भक्ति-आन्दोलन : उद्भव, प्रकृति और प्रदेय, 2. कबीर वाणी के अध्ययन की परम्परा : एक रेखांकन, 3. कबीर वाणी की लिखित और मौखिक परम्परा तथा कबीर का व्यक्तित्व, 4. कबीर की सांस्कृतिक मनोभूमि, 5. कबीर : अन्तर्विरोधों के बावजूद, 6. रहस्यानुभूति के विविध आयाम और कबीर, 7. कबीर का 'अनभै साँच', 8. हिन्दी निर्गुण सन्त काव्य में बौद्ध धर्म एवं दर्शन के अवशेष, 9. नाथपंथ का संतमत पर प्रभाव, 10. नाथयोग और भारतीय संत-साहित्य, 11. महाराष्ट्र और गुजरात के संतों पर नाथ-योग का प्रभाव, 12. कबीर और बंगाल के बाउल संत, 13. संत-सम्प्रदायों की राजनीति परिणति, 14. संत साहित्य में लोक-जीवन की स्वीकृति, 15. कबीर का सम-सामयिक और परवर्ती संतों पर प्रभाव, 16. कबीर का आदर्शमानव और मानवतावाद, 17. कबीर को कबीर ही रहने दें।

सजिल्द 180.00
अजिल्द 100.00

इतने बड़े हिन्दी क्षेत्र में पुस्तकों का कम छपना और बिकना एक चिन्ताजनक स्थिति है। इसकी एकमात्र वजह हिन्दी प्रदेशों की कम साक्षरता दर ही नहीं है बल्कि मुझे लगता है कि यह एक सांस्कृतिक संकट है। आज हिन्दी की अच्छी पुस्तकों की अधिक से अधिक पाठकों तक पहुँचाने की जरूरत है।

—सच्चिदानंद
सचिव
साहित्य अकादमी

मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण

100.00

मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला

325.00

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कला इतिहास विभाग के **डॉ० मारुतिनन्दन तिवारी** तथा **डॉ० कमल गिरि** को संयुक्त रूप से उनकी कृति **'मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण'** के लिए आचार्य नरेन्द्रदेव पुरस्कार से सम्मानित किया है। इसके पूर्व भी लेखकद्वय की कृति **'मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला'** को भी आचार्य नरेन्द्रदेव सम्मान प्राप्त हो चुका है। इसके अतिरिक्त इन कृतियों को केन्द्रीय सरकार के पुरस्कार-सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। हिन्दी में दोनों ही पुस्तकें अपने विषय की अन्यतम कृति हैं।

संसद और संवाददाता

ललितेश्वरप्रसाद श्रीवास्तव

पृ० 108, मू० 120 रुपये

सन् 1611 में पहला समाचार पत्र इंग्लैंड में निकला उस समय वहाँ राजा जेम्स प्रथम और भारत में मुगल बादशाह जहाँगीर का राज था। इससे दो वर्ष पहले 1609 में जर्मनी से समाचार पत्र निकला था। 1780 में जेम्स आगस्टस हिकी ने कलकत्ता से 'बंगाल बजट' निकाला। हिन्दी में पहला अखबार 1826 में 'उदन्त मार्तण्ड' था। हिन्दी का पहला दैनिक समाचार पत्र हिन्दोस्थान 1893 में कालाकांकर से निकला। मदनमोहन मालवीय इसके सम्पादक थे। सम्पादक मण्डल में बालमुकुन्द गुप्त और प्रतापनारायण मिश्र।

बिना संवाददाता के अखबार नहीं निकलते। पत्रकारिता पर काफी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। संसदीय रिपोर्टिंग पर यह महत्वपूर्ण पुस्तक है। पत्रकारिता के छात्रों को संसदीय रिपोर्टिंग की सही जानकारी नहीं हो पाती। लेखक ने इस कमी को पूरा करने के लिए यह पुस्तक लिखी है। संसद की शब्दावली को भी आम पाठक नहीं समझ पाता। संसद के संचालन की प्रक्रियाओं को भी समझना कठिन होता है। ये सब कठिनाइयाँ दूर करने की कोशिश इस पुस्तक में की गई है। लेखक 35 वर्षों तक संसद की रिपोर्टिंग करते रहे हैं। वह सब अनुभव इस पुस्तक का आधार बना है।

—नवभारत टाइम्स

उत्तिष्ठ कौन्तेय

डॉ० डेविड फ्रॉली
(वामदेव शास्त्री)

अनुवाद
केशवप्रसाद कायाँ

सजिल्द : 250.00
अजिल्द : 150.00

''ऐ भारतवासियों तुम अपनी गौरवशाली विरासत को पहचानो। अपनी प्राचीन संस्कृति एवं वैदिक धर्म के रहते हुए तुम क्यों हीन भावना से ग्रस्त हो? तुम्हारा धर्म विश्व के अन्य प्रवर्तक धर्मों की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ एवं कल्याणकारक है। हे अर्जुन! (भारतवासी) उठो! जागो! अपने आत्म-सम्मान को पहचानो और हीन भावना को त्यागो।''—**डॉ० फ्रॉली**

विषयानुक्रम

खण्ड-एक (सामाजिक समस्याएँ)

1. उत्तिष्ठ कौन्तेय, 2. हिन्दुत्व : संकट के घेरे में, 3. समाचार-पत्रों में हिन्दुत्व विरोधी स्वर, 4. हिन्दू-कट्टरवाद : कितना सच कितना झूठ? 5. भारत के शिक्षा-शास्त्रियों पर वामपंथी प्रभाव, 6. भारत तथा राष्ट्र की अवधारणा, 7. पाकिस्तान में धार्मिक उन्माद, 8. अपने धर्म की आलोचना पर आक्रोश।

खण्ड-दो (धार्मिक समस्याएँ)

1. वेदान्त, एकता एवं सार्वभौमिकता 2. वेदान्त की व्यावहारिकता-स्वामी विवेकानन्द का संदेश, 3. धर्म एवं सत्य की एकता, 4. धर्मों का साम्य तथा धार्मिक सहिष्णुता, 5. स्वामी रामतीर्थ के मत, इस्लाम के बारे में, 6. 'ईसाई और इस्लाम के प्रति हिन्दू-दृष्टिकोण' रामस्वरूप की पुस्तक पर टिप्पणी, 7. यौगिक अध्यात्म और इस्लाम।

खण्ड-तीन (ऐतिहासिक तथ्य)

1. भारत तथा हिन्दू-धर्म महाभारत के सन्दर्भ में, 2. 'आर्यों के भारत पर आक्रमण' सिद्धान्त को पश्चिमी पाठ्य-पुस्तकों द्वारा चुनौती, 3. आर्य और द्रविड़ विभाजन, 4. वैदिक एवं शैव मत का एकत्व, 5. रावण की वंश-परम्परा।

खण्ड-चार (सांस्कृतिक तथ्य)

1. पूर्व और पश्चिम भ्रामक सीमा-रेखा, 2. विश्व-स्तर पर हिन्दू-संस्कृति की उपादेयता, 3. एक अमेरिकी द्वारा वेदों का अन्वेषण।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान तथा अन्य अनेक संस्थाएँ हिन्दीतर भाषा-भाषियों को पुरस्कृत करती रही हैं जबकि किसी भी भारतीय भाषा ने इस स्तर का कोई प्रावधान हिन्दी के लिए नहीं किया है। हिन्दी जगत की उदारता और सहिष्णुता का आलम यह है कि विराट क्षेत्र होने के बावजूद साहित्य अकादमी में वह एक पुरस्कार पाकर भी चुप है। बरसों से यह चल रहा है जबकि कम से कम चार पुरस्कार हिन्दी के लिए होने ही चाहिए।

—जयप्रकाश भारती

भारतीय मनीषा के अग्रदूत पं० मदनमोहन मालवीय

सम्पादक
डॉ० चन्द्रकला पाडिया
डॉ० भावना मिश्र

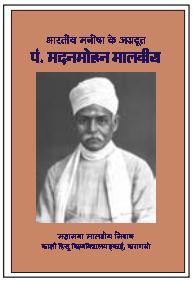

एक सौ पचास रुपये

बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जिन देवकल्प महापुरुषों ने भारत को अपने संज्ञान एवं मनीषा से आलोकित किया, उनमें पण्डित मदनमोहन मालवीय का नाम अग्रणी है। वे आधुनिक भारत के निर्माता एवं युगद्रष्टा थे। उन्होंने युग के स्पन्दन को पहचानकर भारत राष्ट्र के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक जीवन में नवजागरण का संचार किया। वे एक ही साथ स्वाधीनता सेनानी, चिन्तक, दार्शनिक, देशभक्त, राष्ट्र-निर्माता, शिक्षाविद्, धर्मानुरागी, विधिज्ञाता, पत्रकार, ओजस्वी वक्ता, साहित्यकार व निष्काम कर्मयोगी थे।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का एक चिरस्मरणीय स्मारक है। इस ज्ञान मन्दिर से निरन्तर ज्ञान-ज्योति प्रकाशित हो रही है। भविष्यद्रष्टा मालवीयजी ने अपने विराट शिक्षा-दर्शन द्वारा उस युवा वर्ग को तैयार करने का प्रयास किया जिसकी एक ओर भारत की सनातन परम्परा एवं भारतीय संस्कृति में अनन्य श्रद्धा हो, तो दूसरी ओर वह कहीं से भी औद्योगिक एवं वैज्ञानिकी तकनीकी शिक्षा में पीछे न रह जाए। प्राच्य और आधुनिकता का ऐसा अद्भुत समन्वय शायद शायद ही भारत के किसी अन्य युगपुरुष में देखने को मिलता है।

इस पुस्तक में मालवीयजी के बहु-आयामी व्यक्तित्व को प्रस्फुटित करने का प्रयास किया गया है।

विषय तथा लेखक

1. परम भागवत मालवीयजी महाराज—*डॉ० विद्यानिवास मिश्र*, 2. महामना : परा और अपरा विद्याएँ—*डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी*, 3. महामनाजी का मानवतावाद—*डॉ० राय आनन्दकृष्ण*, 4. सर्वप्रतिभासम्पन्न पं० मदनमोहन मालवीय—*डॉ० मनु शर्मा*, 5. विशिष्टविभूति : महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय—*डॉ० सुधांशुशेखर शास्त्री*, 6. महामना मालवीय : सिद्धवाणी के अमृतपुरुष—*श्री पारसनाथ सिंह*, 7. महामना की शिक्षा विषयक दृष्टि और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय—*डॉ० देवेन्द्रकुमार राय*, 8. शिक्षा का उत्तर आधुनिक परिदृश्य और महामना मालवीयजी की शिक्षा-दृष्टि—*डॉ० कमलेशदत्त त्रिपाठी*, 9. महामना के चिकित्सा-शिक्षा सम्बन्धी विचार एवं उनकी समकालीन समन्वयवादी दृष्टि—*डॉ० रामहर्ष सिंह*, 10. महामना की सारस्वत साधना एवं सामाजिक दर्शन—*डॉ० वशिष्ठनारायण त्रिपाठी*, 11. सामाजिक समरसता के पथ-प्रदर्शक मदनमोहन मालवीय तथा रविन्द्रनाथ ठाकुर—*डॉ० अनुराधा बनर्जी*, 12. पं० मदनमोहन मालवीय का राजनीति चिन्तन—*डॉ० भावना मिश्रा*, 13. पं० मदनमोहन मालवीय और महात्मा गाँधी : अन्त:चेतना की राजनीति—*डॉ० चन्द्रकला पाडिया*, 14. राष्ट्रीयता के प्रबल पक्षधर : महामना मदनमोहन मालवीय—*डॉ० मञ्जूराय*, 15. पत्रकारिता के भीष्म पितामह पं० मदनमोहन मालवीय—डॉ० अर्जुन तिवारी, 16. मालवीयजी की दृष्टि में—कृषि, पशुपालन एवं दुग्ध उत्पादन—डॉ० भूपेन्द्र राय, 17. Malaviyaji and Globalization—*Dr. R.P. Rastogi*, 18. Malaviyaji and Value Education—*Dr. A.N. Tripathi*, 19. Mahamana's Vision of Science and Technology at Banaras Hindu University—*Dr. S.C. Lakhotia*, 20. Cultural Nationalism : A Political Dictum of Mahamana—Dr. *M.N. Nigam*.

वाग्दोह

प्रो० कल्याणमल लोढ़ा

विषय

१. संस्कृत और संस्कृति, २. धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे, ३. काल, ४. प्राचीन भारत का विद्यादर्श, ५. शिक्षा की मूल अवधारणाएँ, ६. अर्थ तत्त्व, ७. विश्वरूप दर्शन, ८. सोमतत्त्व।

लोढ़ाजी का मनोमुकुर साहित्य के गहन अनुशीलन के अभ्यास से निर्मल हो गया है और इसीलिए उसमें वर्णनीय विषय में तन्मय होने की क्षमता है। 'वाग्दोह' इस युग की आवश्यकताओं के अनुकूल पाठक को पोषक पाथेय प्रदान करती है।

—प्रो० सिद्धेश्वरप्रसाद

प्राचीन भारतीय शासन पद्धति

प्रो० अनंत सदाशिव अलतेकर

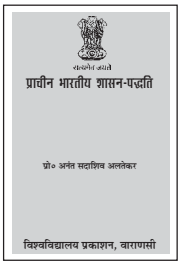

विषय

१. राजनीति शास्त्र : उसके नाम, इतिहास व आधारभूत ग्रन्थ, २. राज्य की उत्पत्ति और प्रकार, ३. राज्य का स्वरूप, उद्देश्य और कार्य, ४. राज्य और नागरिक, ५. नृपतंत्र, ६. गणराज्य या प्रजातंत्र, ७. केन्द्रीय लोकसभा, ८. मंत्रिमण्डल, ९. केन्द्रीय शासन-कार्यालय व शासन-विभाग, १०. प्रान्तीय, प्रादेशिक, जिला और नगर शासन-व्यवस्था, ११. ग्राम-शासन-पद्धति, १२. न्यायदान-पद्धति, १३. आय और व्यय, १४. अंतरराष्ट्रीय सम्बन्ध व व्यवहार, १५. राज्यशासन का ऐतिहासिक सर्वेक्षण : भाग १, १६. राज्यशासन का ऐतिहासिक सर्वेक्षण : भाग २, १७. गुणदोष-विवेचन, १८. राज्याभिषेक।

सजिल्द : 250.00 **अजिल्द 125.00**

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और उनका काव्य-संसार

डॉ० मञ्जु त्रिपाठी

एक सौ रुपये

रचना के क्षेत्र में व्याप्त संत्रास, कुण्ठा, अजनबीपन, निरुद्देश्यता, अन्तर्मुखता और संशयग्रस्त मानसिकता को पीछे ठेलकर सर्वेश्वर का कवि ग्रामीण स्मृतियों एवं संवेदनाओं का रचनात्मक उपयोग करते हुए आगे बढ़ा। उसने रचना को ठोस यथार्थ की जमीन से जोड़ा। पूँजीपतियों द्वारा पोषित और संरक्षित पारम्परिक जीवन-मूल्यों की निरर्थकता का अनुभव करते हुए उसने उन मूल्यों के प्रेरणा स्रोत ईश्वर को भी नकार दिया। इसलिए नकार दिया कि उसने देखा कि आज की स्वार्थान्ध और विवेकहीन भोगवादी व्यवस्था ने अपनी सारी विकृतियों, अनीतियों एवं अमानवीय व्यापारों को छिपाने के लिए उसे ढाल के रूप में इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। 'ईश्वर' का नकार, बहुत बड़े साहस का कार्य था। यह साहस उसी रचनाकार के लिए संभव है जिसे मनुष्य की असीम संभावनाओं पर अखण्ड विश्वास हो। कवि सर्वेश्वर ने मनुष्य के प्रति इसी अखण्ड आस्था को लेकर व्यवस्था को चुनौती दी। उन्होंने अनुभव किया कि आज की क्रूर अमानवीय यांत्रिक व्यवस्था मानवीय मूल्यों का उसी प्रकार हनन कर रही है जिस प्रकार जंगल में भेड़िये निरीह पशुओं का भक्षण करते हैं। व्यवस्था के ये भेड़िये कहीं बाहर से नहीं आते। हमी में से कुछ लोग स्वार्थान्ध होकर भेड़िये बन जाते हैं। इनसे डरने से काम नहीं चलेगा। जनता को अन्याय, अज्ञान और शोषण से मुक्त करना है तो उसे संघटित करना होगा। उसकी आन्तरिक शक्ति की मशाल को प्रज्ज्वलित करना होगा। कवि को विश्वास है कि यांत्रिक, विवेकहीन, असंवेदनशील और जड़ व्यवस्था मशाल नहीं जला सकती। जब करोड़ों जनता की आत्मशक्ति संघटित होकर प्रज्ज्वलित हो उठेगी तब शोषण और अन्याय की अमानवीय शक्तियाँ निश्चय ही पराजित होंगी।

विषय-क्रम

1. परम्परा और पृष्ठभूमि, 2. सर्वेश्वर : जीवन और साहित्य, 3. सृजन के आयाम, 4. काव्य शिल्प, 5. उपलब्धि और सीमाएँ।

शिवस्वरूप बाबा हैड़ा खान

विंग कमाण्डर **सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव**

अध्यात्म-क्षेत्र में दिव्य विभूतियों के दर्शन और आशीर्वाद का विशेष महत्त्व है। हमारे यहाँ जीवन-यात्रा के मार्ग अनेक हैं, साधन पृथक्-पृथक्। दिव्यशक्ति से साकार महापुरुष ही सुगम मार्ग से सुपरिचित कराकर लक्ष्य-प्राप्ति करा सकते हैं। आध्यात्मिक उत्कर्ष के लिए तत्वानुशीलन और गुरु का निदर्शन अत्यावश्यक है। उत्तरांचल में एक ऐसे ही महात्मा एवं दिव्यात्मा के दर्शन का सौभाग्य लोगों को प्राप्त हुआ है, जिनके दृष्टिपात से योग-क्रिया के सारे गूढ़तम रहस्य खुल जाते हैं। इतना ही नहीं, त्रिनेत्र भी खुल जाते हैं। बाबा हैड़ाखान ने, जिन्हें शिवस्वरूप अवतारिक महापुरुष कहा जाता है, न केवल अपने देश भारत में, अपितु सुदूर विदेशों में तत्वान्वेषण का मार्ग प्रशस्त किया है। वे कभी साकार, कभी निराकार होकर अपने प्रेमी भक्तों को दर्शन देते रहते हैं। इस पुस्तक के लेखक को, जो भारतीय वायुसेना के बड़े अधिकारी रहे हैं, बाबा के दर्शन हुए। उनके आशीर्वाद से इनका जीवन आनन्दमय हो गया। बाबा हैड़ाखान के सम्पर्क में आने के उपरान्त इन्हें जो रहस्यपूर्ण अनुभव हुए, उनका व्यापक वृत्तान्त इस पुस्तक का प्रतिपाद्य विषय है।

विषयानुक्रम

1. कूर्मांचल कैलाश, जटाशंकरी, गौतमी गंगा, पवित्र गुफा, हैड़ाखान विश्वमहाधाम और हैड़ाखान, 2.क्रिया-योग, 3. चक्र और उनके वर्णन— मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, वसुधा और आज्ञाचक्र, 4. त्रिनेत्र, 5. संस्कार, 6. सद्गुरु, 7. दीक्षा, 8. आरती, 9. चरणामृत, 10. मोक्ष, 11. योग और मृत्यु, 12. महावतार बाबाजी के दर्शन—शक्ति का आशीर्वाद, बाबाजी से भेंट और एयर फोर्स से मुक्ति, 13. मधुबन—पृथ्वी पर चन्द्रमा और महाशक्ति के दर्शन, 14. अमरनाथ-यात्रा, ग्रहों से सम्बन्ध, 15. श्री प्रभु के चरण-चिह्न, चरण-चिह्नों के ध्यान का महत्त्व और 1982 का कुम्भ पर्व।

4 पृष्ठ रंगीन तथा
12 पृष्ठ श्वेत श्याम दुर्लभ चित्रों सहित

एक सौ पचास रुपये

वाग्द्वार

प्रो० कल्याणमल लोढ़ा

दो सौ पचास रुपये

प्रो० लोढ़ा बहुश्रुत प्रज्ञा पुरुष हैं। 'वाग्द्वार' के दस निबन्धों में उन्होंने हिन्दी-काव्य के 'अष्टछाप' की मौलिकता की मर्मस्पर्शी व्याख्या प्रस्तुत की है। इसमें पिष्टपेषण नहीं, नवोन्मेष है। कवियों के व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों का अन्तर्दर्शन भी। हिन्दी काव्य को इतने व्यापक पटल पर बहुत कम आलोचक देख-परख पाये हैं।

—प्रो० सिद्धेश्वरप्रसाद
भूतपूर्व राज्यपाल, त्रिपुरा

भारतीय संस्कृति और परम्परा के नए गवाक्ष खोलने वाले महत्त्वपूर्ण रचनाकारों की समीक्षा इसमें प्रस्तुत की गई है। **—नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद**

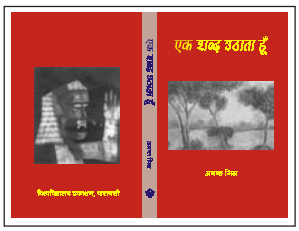

एक शब्द उठाता हूँ

अनन्त मिश्र

एक सौ अस्सी रुपये

अनन्त मिश्र का कविता संग्रह बहुत विलम्ब से पाठकों के पास पहुँच रहा है। इसका मुख्य कारण यही है कि वे छपास रोग और इतिहास-प्रवेश की लालसा से मुक्त एक शुद्ध कवि हैं जो कविता लिख कर ही मुक्त तो हो जाते हैं और तृप्त। उनकी कविता से कोई कौन सा हित-साधन कर लेगा या उन्हें कवियों के किस खाने में डाल देगा, इसकी चिन्ता उन्हें नहीं। समुद्र मन्थन के इस भयानक देव-दानव संघर्ष में वे जिन्दगी की लय के साथ हैं। थके हारे बूढ़े काका के लिए एक चारपाई की तरह, बछड़े के लिए गाय के कच्चे दूध की तरह। जो जीवन-धारा में बहना चाहते हैं उनके लिए अनन्त मिश्र के पास हमेशा हैं कविताएँ। कविताएँ जिनमें सायास बुनावट नहीं, चालाकियाँ नहीं, छद्म नहीं। जो सहज संवेदना और कवि की उपस्थिति से भरी पूरी है। कवि जो पक्षियों को छंद की तरह तृप्त भाव से देख सकता है और जेब में मूँगफली भरे, चिड़ियों से बातें करते भीड़ में गुजर सकता है। अनन्तरूपात्मक जगत के साथ कवि का सहज लगाव उसे मानव के साथ मानवेतर प्राणियों तक ले जाता है—नाग-नागिन, पात-पुरइन, बाघ-बाघिन, कुत्ते, गदहे, अमरूद के तोते और गिलहरियों तक। सायकिल और बेंच जैसे प्राणहीन पदार्थों की भी चिन्ता है कवि को। उसे विश्वास है कि यह दुनिया रहेगी इसलिए वह आदमी को बार-बार उसके बीज होने की याद दिलाना चाहता है। अपने समय की चालू, दो दुना चार वाली कविताओं से अलग मस्ती में, पस्ती में, राग और विराग में लिखी गई अनन्त मिश्र की ये विरल कविताएँ कविता को किसी परिभाषा में बाँधने के जड़ प्रयास का प्रतिकार करती हैं। **—विश्वनाथप्रसाद तिवारी**

पत्र, पत्रकार सरकार

काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर

एक सौ बीस रुपये

इस पुस्तक का पूर्णतया संशोधित तथा परिवर्धित संस्करण। पत्र तथा पत्रकारों से सम्बन्धित नये शासन देशों के सन्दर्भ यह संस्करण पत्रकारों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

एजुकेशनल एण्ड वोकेशनल गाइडेन्स इन इण्डिया

डॉ० के०पी० पाण्डेय

एक सौ पचास रुपये

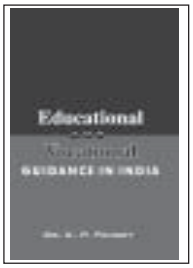

प्रोफेसर के०पी० पाण्डेय द्वारा हाल ही में लिखी एक नई पुस्तक '**एजुकेशनल एण्ड वोकेशनल गाइडेन्स इन इण्डिया**' नवयुवकों के लिए काफी प्रेरणादायक और मार्गदर्शक है। लेखक ने इस पुस्तक को कुल सात अध्यायों में प्रस्तुत किया है जो वास्तव में भारतीय शिक्षा प्रणाली, शोध प्रबंधन तथा शिक्षा की बढ़ती रूपरेखा पर आधारित है। इसमें लेखक ने विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं तथा अभ्यर्थियों को शिक्षा में उभरती नई-नई सम्भावनाओं और पद्धतियों से अवगत कराने की चेष्टा की है।

प्रोफेसर पाण्डेय आधुनिकता की आड़ में छिपी विषमताओं और सुअवसरों को नजर में रखते हुए कहते हैं कि इक्कीसवीं सदी में देश के कई क्षेत्रों—साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, भारतीय अर्थ-व्यवस्था में बदलाव, जलवायु परिवर्तन और सामाजिक ढाँचे में विशेष अन्तर जैसी चीजें माँग तथा परस्पर स्पर्धा के कारण बढ़ती जा रही है।

आज देश की सम्पूर्ण जनसंख्या में 18 से 20 फीसदी युवा वर्ग शामिल है इसलिए यह आवश्यक है कि इस पीढ़ी को प्रोत्साहित तथा सही मार्गदर्शन दिया जाए। आज नवयुवकों के अन्दर छिपी रचनात्मक एवं सकारात्मक भावना को जागृत करना होगा तथा उनके साहस और प्रभावशील व्यक्तित्व को उभारना होगा। प्रोफेसर पाण्डेय ने इस किताब के माध्यम से युवाओं को विशेष लक्ष्य तथा उसकी पूर्ति के लिए कई प्रकार के उपायों एवं संभावनाओं का उल्लेख करके लाभान्वित करने की कोशिश की है।

इन्होंने पंचतंत्र तथा जातक जैसी पुस्तकों को मार्गदर्शन का एक मुख्य सूत्र माना है। मार्गदर्शन व निर्देशन के तरीकों को समझाते हुए वे कहते हैं कि निपुण सेवा निर्देशन, शैक्षिक निर्देशन तथा मौखिक निर्देशन बच्चों को इस प्रकार प्रभावित करती है जिससे इनमें छिपे गुण, रचनात्मक क्षमता और रुचि में असीम बदलाव तथा असर आता है। वह शिक्षकों को सलाह देते हैं कि उनका यह कर्त्तव्य है कि वे छात्रों के मौलिक एवं बौद्धिक स्तर के गुणों को विकास में लाएँ। यह तभी सम्भव है जब बच्चों को शुरू से ही उनकी भावनाओं एवं गुणों को प्रोत्साहित किया जाए। बच्चों में जागरूकता, रूचियों का विकास, आत्मसम्मान, सामाजिक भावनाओं, अच्छे गुणों का समावेश और आत्मनियंत्रण जैसे गुणों को शुरू से ही उभारने की आवश्यकता है। सही सलाह और निर्देशन नवयुवकों के मानसिक, शारीरिक एवं सामाजिक कर्तव्यों के प्रति सचेत करता है।

प्रोफेसर पाण्डेय व्यक्ति की सफलता व असफलता, गुण व अवगुण, अच्छाई व बुराई को सही ढंग से समझने और परखने के लिए प्रेरित करते हैं जिससे कई छिपी बातों व जानकारी से परे तत्त्वों को आकलन करने में सहायता मिल सकती है। लेखक ने निर्देशन और मार्गदर्शन को सभी व्यक्तियों के लिए जरूरी बताया है। माता-पिता व अभिभावक तथा शिक्षक के माध्यम से नवयुवकों को अपने अन्दर सद्गुणों का विकास करना चाहिए।

लेखक का मानना है कि छात्रों के उज्ज्वल भविष्य के लिए उन्हें शिक्षा पद्धति, नये बदलाव, संस्थानों की व्यवस्था एवं नियमों के बारे में जानकारी और सही कोर्स का चयन जैसे विषयों से अवगत होना आवश्यक है। प्रभावशील सलाह तथा इंटरव्यू में आत्म-विश्वास का किस तरह सदुपयोग किया जाए, इसका लेखक ने बहुत ही सुचारु रूप से प्रस्तुतीकरण किया है।

निर्देशन एवं मार्गदर्शन प्रक्रिया के लिए इस किताब में वर्णित तथ्यों और तरीकों एवं माध्यमों को काफी मजबूती से वर्णन किया गया है जो किसी पाठक के लिए अति उपयोगी साबित हो सकती है।

इस पुस्तक की सार्थकता तब और भी बढ़ जाती है जब इसके अन्तिम अध्याय में छात्रों को नौकरी का अर्थ, अभिप्राय, आवेदन के तरीके, नौकरी का व्यापक स्तर एवं सार्थकता और इससे सम्बन्धित नियम तथा कानून जैसी बातों को विस्तृत रूप से बताया गया है। एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कोई नौकरी किसी के लिए भी कितनी सार्थक और लक्ष्य-पूर्ति में उपयोगी है यह समझना जरूरी है। प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से लेखक ने अपने शोध सम्बन्धी बातों और अध्ययन, अध्यापक के क्षेत्र में विगत चालीस वर्षों के अनुभवों को निर्देशन के रूप में रेखांकित किया है।

—अविनाश झा (हिन्दुस्तान, लखनऊ)

यदि मुझसे पूछा जाए कि भारत की सबसे विशाल सम्पत्ति क्या है और उत्तराधिकार के रूप में उसे सर्वोत्तम कौन-सी वस्तु प्राप्त है तो मैं निस्संकोच उत्तर दूँगा कि यह सम्पत्ति संस्कृत भाषा और साहित्य एवं उसके भीतर जमा सारी पूँजी ही है। यह एक उत्तम अधिकार है और जब तक वह कायम है तथा हमारे जीवन को कायम किये है, तब तक भारत की आधारभूत प्रतिभा भी अक्षुण्ण रहेगी। यह बड़े आश्चर्य की बात है, अतीत की सम्पत्ति होते हुए भी संस्कृत एक जीवित परम्परा है। मैं संस्कृत के अध्ययन के प्रोत्साहन को और अपने विद्वानों को इस भाषा के साहित्य को, जो प्राय: भुला दिया गया है, छानबीन में लगाना पसन्द करूँगा।

— जवाहरलाल नेहरू

पुलिसकर्मियों की समस्याएँ : समाजवैज्ञानिक अध्ययन

डॉ० विजय प्रताप राय

तीन सौ रुपये

भारतीय सामाजिक व्यवस्था को सुव्यवस्थित संचालित करने या करवाने की प्रत्यक्ष जिम्मेदारी तथा जवाबदेही पुलिस बल की होती है। अधिकांश जनमानस चाहे वे शहर, नगर, कस्बा अथवा ग्रामीण क्षेत्र में रहते हों पुलिस थाना ही एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ लोग अधिकांशत: पुलिस के सम्पर्क में और पुलिस लोगों के सम्पर्क में आती है। स्वतंत्रता पूर्व में पुलिस की लोगों के प्रति किसी भी प्रकार की कोई जवाबदेही नहीं थी जबकि स्वतंत्रता के बाद लोकतांत्रिक संविधान, लोकतांत्रिक सरकारें तथा सामाजिक परिवर्तन के दौर में पुलिस बल से समाज को काफी अधिक अपेक्षाएँ हैं। पुलिस की उत्तरोत्तर खराब होती सामाजिक छवि पुलिस बल एवं समाज दोनों के लिए अभिशाप होता जा रहा है। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की सक्रियता ने तो आम आदमी को इतना जागरूक कर दिया है कि पुलिस द्वारा किया गया विधि विरुद्ध आचरण तथा मानवाधिकारों के उल्लंघन की छोटी-से छोटी घटनाएँ भी पुलिस बल की सामाजिक छवि को प्रभावित कर रही हैं।

पुलिस बल की नकारात्मक छवि के बारे में गहनता से अध्ययन कर यह जानने का प्रयास किया कि ऐसे वे कौन से कारक हैं जिनके कारण पुलिस बल की कार्यप्रणाली पर उत्तरोत्तर सवाल उठ रहे हैं। इनकी कार्यप्रणाली तथा इनकी समस्याओं के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष एवं सुझाव विस्तारपूर्वक दिये गये हैं, जो पुलिस बल के प्रभावी सुधार में अपनी रचनात्मक भूमिका अदा कर सकते हैं।

मुट्ठी में बन्द तूफान

अनिन्दिता

पन्चानबे रुपये

यह अनिन्दिता का पहला कहानी संग्रह है, जिसमें कुल ग्यारह कहानियाँ हैं। सभी कहानियाँ अनुभूत सत्य पर आधारित हैं। लेखिका ने जीवन और समाज में व्याप्त विसंगतियों और समस्याओं को बड़ी बारीकी, गहराई और तीखेपन के साथ प्रस्तुत किया है। कहानियों को पढ़ने के बाद भीतर से ध्वनि निकलती है कि—सच कहा। **—राँची एक्सप्रेस**

इस संग्रह की सभी कहानियाँ भाव प्रवण एवं रचना सौष्ठव से पूर्ण हैं। प्रत्येक कहानी का निर्वाह इतने कलात्मक ढंग से हुआ है कि वह समस्या के बोझ में दबी नहीं मालूम होगी। **-गाण्डीव, वाराणसी**

नवीनतम श्रेष्ठ प्रकाशन

उपन्यास

एक नौकरानी की डायरी *कृष्णबलदेव वेद* 225
पर्वत से सागर तक *शैलेश मटियानी* 150
निवेदिता *दशरथ ओझा* 250
कितने पाकिस्तान *कमलेश्वर* 250
कथा सतीसर *चन्द्रकान्ता* 350
मैं अपराधी हूँ *कृष्णा अग्निहोत्री* 400
मैं और मैं *मृदुला गर्ग* 250
एक-सा संगीत *विक्रम सेठ* 295
तरुण संन्यासी (विवेकानंद) *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 150
पांचाली : नाथवती अनाथवत् *डॉ० बच्चन सिंह* 125
ननकी *बच्चन सिंह (पत्रकार)* 125
भवानीनंदन श्री गणेश *युगेश्वर* 150
मुंशी रायजादा *लक्ष्मीकान्त वर्मा* 350
अग्निबीज *मार्कण्डेय* 150
हवेली से बाहर *राजकुमार* 250
गन्धर्व सेन *शरद पगार* 250

कहानी

एक अकेले गान्ही जी *जयनन्दन* 125
जमुनी *मिथिलेश्वर* 125
तो क्या *शरद चन्द्रा* 150
अतीत का चेहरा (जाबिर हुसैन की डायरी) 195
नृशंस *अवधेश प्रीत* 125
आँगन में उगी पौध *कुसुम चतुर्वेदी* 140
तीसरा यात्री *कुसुम चतुर्वेदी* 80
मुट्ठी में बन्द तूफान *अनिन्दिता* 95
मसखरे कभी नहीं रोते *स्वदेश दीपक* 80
चल खुसरो घर अपने *विभा रानी* 150

नाटक

नाटक तो होगा *योगराज* 100
मोकौ कहाँ ढूँढे रे बन्दे *इरावती* 100
शताब्दी पुरुष *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 100

हास्य-व्यंग्य

जीवो क्रेसी *गिरिश पाण्डे* 50
यत्र तत्र सर्वत्र *शरद जोशी* 200

आत्मकथा-जीवनचरित, संस्करण

सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव जीवन और दर्शन *नन्दलाल गुप्त* 140
कहि न जाय का कहिए *भगवतीचरण वर्मा* 125
भारतीय मनीषा के अग्रदूत : पं० मदनमोहन मालवीय *सं० डॉ० चन्द्रकला पाडिया* 150
शिवस्वरूप बाबा हैड़ा खान *सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150
मनीषी की लोकयात्रा *गोपीनाथ कविराज* 300
गाँधी, अम्बेडकर, लोहिया और भारतीय इतिहास की समस्याएँ *डॉ० रामविलास शर्मा* 750
स्वरामि *नरेन्द्र कोहली* 175
मेरे संस्मरण *विष्णु प्रभाकर* 125
नोबेल पुरस्कार सम्मानित भारतीय *विश्वामित्र शर्मा* 125

साहित्य और संस्कृति

वाग्दोह *कल्याणमल लोढ़ा* 200
वाक्‌सिद्धि *कल्याणमल लोढ़ा* 160
वाग्द्वार *कल्याणमल लोढ़ा* 250
उत्तिष्ठ कौन्तेय *डॉ० डेविड फ्राली* 250
वैदिक साहित्य एवं संस्कृति *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 250
संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास *डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी* 350
भारत और पश्चिम संस्कृति के अस्थिर सन्दर्भ *रामस्वरूप चतुर्वेदी* 80
कभी कभार *अशोक वाजपेयी* 395

इतिहास

इक्कीसवीं सदी का भारत *डॉ० ए०पी०जे० अबुल कलाम* 200
आज का भारत *नानी पालखीवाला* 200
हम हिन्दुस्तानी *नानी पालखीवाला* 90
विकल्पहीन नहीं है दुनिया *किशन पटनायक* 250
उपनिवेशवाद का सामना *सं० इरफ़ान हबीब* 325
इतिहास और विचारधारा
खालसा के तीन सौ साल *सं० जै०एस० ग्रेवाल : इंदु बंगा* 295
भारतनामा *सुनील खिलनानी* 250
मध्यकालीन भारत का आर्थिक इतिहास : एक सर्वेक्षण *इरफ़ान हबीब* 95
प्राचीन भारतीय शासन-पद्धति *प्रो० अनन्त सदाशिव अलतेकर* 125
बिहार में सामाजिक परिवर्तन के कुछ आयाम *प्रसन्नकुमार चौधरी* 250

जैन धर्म तथा साहित्य

जैन धर्म *आचार्य प्रवर श्री सुशील मुनि* 200
इतिहास के अनावृत्त पृष्ठ *आचार्य सुशीलकुमार* 30
हिन्दी साहित्य और दर्शन में आचार्य सुशील कुमार का योगदान *आचार्य डॉ० साध्वी साधना* 500
अपभ्रंश का जैन साहित्य और जीवन मूल्य *साध्वी साधना* 250

स्त्री विमर्श

आदमी की निगाह में औरत *राजेन्द्र यादव* 200
साम्प्रदायिक दंगे और नारी *नूतन सिन्हा* 450
अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य *सं० राजेन्द्र यादव, अर्चना वर्मा* 250
विद्रोही स्त्री *जर्मेन ग्रीयर* 295

कविता

रेत-रेत लहू *जाबिर हुसैन* 95
स्वच्छंद *सुमित्रानंदन पंत* 175
एक शब्द उठाता हूँ *अनन्त मिश्र* 180
कल्लोलिनी *मंगला प्रसाद* 200
सत्यकाम *मंगला प्रसाद* 100
नयी कविता-1 *जगदीश गुप्त* 250
नयी कविता-2 *रामस्वरूप चतुर्वेदी* 250
नयी कविता-3 *विजयदेव नारायण स्नेही* 400
सम्पूर्ण कविताएँ *कुमार विकल* 150
अन्त की कुछ और कविताएँ *तेजी ग्रोवर* 100
वेद की कविता *प्रभुदयाल मिश्र* 150

अपराध और न्याय

न्यायपालिका कसौटी पर *कमलेश जैन* 150

यात्रा

अरे यायावर रहेगा याद ? *अज्ञेय* 160

ग्राम विकास तथा कृषि

समग्र विकास के लिए ग्रामीण सहभागिता *सन्ध्या चौकरी, हेमन्त मेहता* 250
बागवानी : सिद्धान्त एवं क्रियाकलाप *रणवीर सिंह सैनी, सुरेन्द्र सिंह* 400
चारा उत्पादन *नन्दकिशोर शर्मा* 200

कोश

भोजपुरी शब्दकोश *गणेश चौबे* 300

विज्ञान

समय का संक्षिप्त इतिहास *स्टीफेन हाकिंग* 175

दर्शन

ज्ञान-दर्शन *श्याम किशोर सेठ, नीलिमा मिश्र* 200

भाषा-अनुवाद

अनुवाद सैद्धान्तिकी *प्रदीप सक्सेना* 225

साहित्य-समीक्षा

मध्ययुगीन काव्य प्रतिभाएँ *डॉ० रामकली सराफ* 120
कबीर और भारतीय संत साहित्य *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 160
वाग्द्वार (सात हिन्दी कवियों का मौलिक अध्ययन) *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 250
देरिदा का विखण्डन और साहित्य *सुधीश पचौरी* 150
तीन शिखर कृतियाँ *कुमार विमल* 60
पौराणिक उपन्यास *हितेन्द्र यादव* 195
सौन्दर्यबोध और हिन्दी नवगीत *डॉ० माधवेन्द्रप्रसाद पाण्डेय* 300

अर्थशास्त्र

आर्थिक विकास और स्वातन्त्र्य *अमर्त्य सेन* 300
भारत की अर्थनीति : नए आयाम *चक्रवर्ती रंगराजन* 225
भारतीय अर्थव्यवस्था : समीक्षात्मक अध्ययन *भरत झुनझुनवाला* 200

शिक्षा

शैक्षिक तकनालॉजी के आयाम *डॉ० सरला पाण्डेय* 150
संसार के महान् शिक्षाशास्त्री *डॉ० इन्द्रा ग्रोवर* 60
महान् शिक्षाशास्त्रियों के सिद्धान्त *आर०आर० रस्क* 80

हिन्दी भाषा तथा साहित्य के नवीनतम प्रकाशनों के लिए लिखें :

विश्वविद्यालय प्रकाशन
पो० बाक्स – 1149
चौक, वाराणसी–221001

योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व-कथा

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज

दो सौ पचास रुपये

विज्ञान शब्द का अर्थ है 'विशिष्ट ज्ञान' और इसी विज्ञान के विषय जड़ तथा चेतन दोनों ही हैं। सूर्य उक्त विज्ञान का केन्द्रस्वरूप और प्रधान आश्रय है। अत: इस विज्ञान को 'सूर्य विज्ञान' भी कहा जाता है। शास्त्र में लिखा है कि एक ऐसा पदार्थ है, जिसका ज्ञान होने से सब विषयों का विज्ञान स्वत: अपने आप ही उपलब्ध हो जाता है। श्रुति का यह अनुशासन ब्रह्मविज्ञान के सम्बन्ध में कहा गया है किन्तु उस विज्ञान का क्या स्वरूप है, उसको किस प्रकार से कार्य रूप में प्राप्त किया जाता है इस बात का जिन्होंने विशेष रूप से अनुसन्धान किया है, वे जानते हैं कि सूर्य ही एकमात्र सब विज्ञानों का मूलाधार है। सृष्टि, स्थिति, संहार अर्थात् जगत के समस्त व्यवहार सूर्य के अधीन हैं। इच्छा-शक्ति, ज्ञान-शक्ति और क्रिया-शक्ति का प्रसार सूर्य से ही होता है। इतना ही नहीं, देवयान पथ का लक्ष्य-स्वरूप सूर्य ही है। उसको यदि मुक्ति का द्वार कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। विशुद्ध आत्मज्ञान अर्थात् स्वरूप उपलब्धि के लिए सौर तत्त्व का आश्रय ग्रहण करना अत्यन्त आवश्यक है अतएव योग का जो चरम उद्देश्य है, वही विज्ञान का भी है। सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण करने पर जाना जाता है कि विज्ञान भी एक प्रकार का महायोग है, एवं जिसको हम लोग योग कहते हैं वह भी मूलत: विज्ञान के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। दोनों में केवल प्रणाली का भेद है। अतएव साधन के पक्ष में दोनों ही समानरूप से आवश्यक हैं। योगपथ में विज्ञान और विज्ञान-पथ में योग परम सहायक हैं।

ज्ञान, विज्ञान, सूर्य-विज्ञान तथा योग के गूढ़ रहस्यों का बोध कराती तत्त्व कथा।

सृजन यज्ञ जारी है

डॉ० अनिलकुमार आंजनेय

सौ रुपये

प्रस्तुत संग्रह 'सृजन यज्ञ जारी है' में 39 यशस्वी आलोचकों तथा समीक्षकों ने सुप्रसिद्ध रचनाकार विवेकी राय के कृतित्व एवं व्यक्तित्व की समीक्षा प्रस्तुत की गयी है।

क्षमा याचना

'भारतीय वाङ्मय' (मासिक) का जनवरी अंक समय से पोस्ट नहीं किया जा सका, क्योंकि डाक विभाग से मासिक पत्र के रूप में पोस्ट करने की अनुमति समय से नहीं मिली। इसके लिए खेदपूर्वक हम पाठकों से क्षमायाचना करते हैं।

कला

हंसकुमार तिवारी

एक सौ पचास रुपये

विख्यात छायावादोत्तर कवि और मनीषी लेखक स्वर्गीय हंसकुमार तिवारी की एक विचार-गर्भित और भाव-विदग्ध मर्मस्पर्शी कृति है **कला**।

तिवारीजी की इस कृति को पौरस्त्य और पाश्चात्य समग्र कला चिन्तन का नवनीत कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी। कला-सृष्टि के लम्बे ऐतिहासिक दौर के विभिन्न पड़ावों और दृष्टिकोणों एवं विमर्शों का लेखा-जोखा लेते हुए उन्होंने बड़े बेलाग और अर्थ-गर्भित निष्कर्ष दिए हैं। 'सत्यं, शिवं, सुंदरम्' के भारतीय दृष्टिकोण के निकष को ही उन्होंने अपना मानदण्ड बनाया है। सत्य दर्शन का विषय है, शिव धर्म का अनुसंधान है और कला का मूल स्रोत सुन्दर और शोध है। दर्शन ज्ञानमूलक है तो धर्म भक्तिमूलक। कला ज्ञान और भक्ति से पुष्ट होकर अपने सीमित क्षेत्र का अतिक्रमण करती है। 1936 में हिन्दी की कला-विषयक प्रथम उत्कृष्ट कृति मानी गई थी और आज भी यह सबसे उत्कृष्ट कला-विषयक सन्दर्भ ग्रन्थ है। प्रकारांतर से कहें तो उनकी यह कृति कला-विमर्श का अमृत-कलश है। **—नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद**

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 2 **फरवरी 2001** **अंक : 2**

प्रधान सम्पादक

पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक

परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क

रु० 30.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन

वाराणसी

के लिए

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी

द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2000

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

✆ : (0542) 353741, 353082 ● Fax : (0542) 353082 ● E-mail : vvp@vsnl.com ● vvp@ndb.vsnl.net.in